सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष
वर्ष 02, अंक 48, नई दिल्ली । मंगलवार, 30 अप्रैल 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

खुद को इतना परफेक्ट बनाओ कि आपकी एक झलक देखने के लिए लोग अपनी पलकें बिछा दें।

03 दिल्लीवालों ने पूरे अप्रैल शुद्ध हवा में ली सांस....
06 वैश्विक ऊंचाई पर खिलौना कारोबार
08 मय 3 मे रायगड़ा आएंगे राहुल गांधी, बिशाल जनसभा को सम्बोधन करेंगे

स्कूटी फिसली और चली गई एसआई की जान

क्यों 'मौत की सुरंग' बन गई है प्रगति मैदान टनल?

दिल्ली के बीच में है प्रगति मैदान। यहां बनी सुरंग इतनी खतरनाक हो गई है कि मरम्मती के बाद भी इसने एक जान ले ली। दिल्ली पुलिस के एसाई एनके पवित्रन की स्कूटी फिसली और डिवाइडर से जा लगी। इस हादसे में पवित्रन को गंभीर चोटें आईं और उन्होंने दम तोड़ दिया।

संजय बाटला

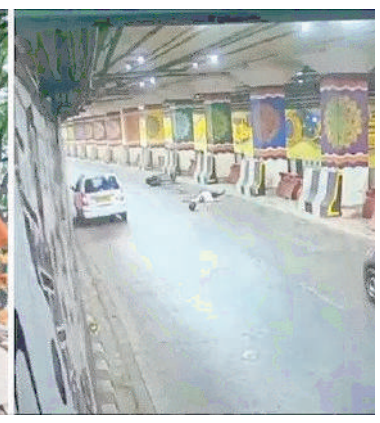

नई दिल्ली: 777 करोड़ का प्रॉजेक्ट, देश की प्रतिष्ठित कंपनी, राजधानी दिल्ली के बीच का हिस्सा और ये दुर्दशा! आखिरकार प्रगति मैदान टनल की खामियों ने एक और जान ले ली। इस बार दिल्ली पुलिस के सब इंस्पेक्टर (एसआई) एनके पवित्रन इस 'मौत की सुरंग' के शिकार हो गए। 11 महीने पहले मई 2023 में भी राजन नाम के व्यक्ति की भी जान भी इसी प्रगति मैदान टनल में हुए हादसे के कारण चली गई। एसआई पवित्रन स्कूटी से जा रहे थे। सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा है कि उनकी स्कूटी फिसलकर डिवाइडर से जा लगी और पवित्रन पीठ के बल सड़क पर गिर गए। गिरते ही सिर से हेलमेट निकल गया और उन्हें गंभीर चोटें आईं। उधर, राजन के साथ भी ऐसा ही हादसा हुआ। उनकी बाइक इंडिया गेट की तरफ वाले कैरिजवे से अचानक दाहिने घूम गई और क्रैश बैरियर्स से टकराने के बाद दूसरे साइड पलट गई। हैरत की बात है कि सुरंग में लगे आपातकालीन कॉल सिस्टम भी काम नहीं किया। मतलब, प्रगति मैदान सुरंग को न केवल खराब तरीके से बनाया गया बल्कि वहां लगा एसओएस सिस्टम भी बेकार है।

प्रगति मैदान टनल का निर्माण देश की जानी-मानी कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ने किया है। इस प्रॉजेक्ट पर 777 करोड़ रुपये की भारी-भरकम रकम खर्च की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 19 जून, 2022 को प्रगति मैदान टनल का उद्घाटन किया था। लेकिन हैरानी की बात देखिए कि दिल्ली के मध्य हिस्से को पूर्वी दिल्ली और एनसीआर के कुछ हिस्सों में पहुंच दिलाने वाले इस टनल में सिर्फ 18 महीने बाद पानी भर गया।

टनल की डिजाइनिंग भी एलएंडी ने ही की थी। डिजाइनिंग में खामियों का अंदाजा इस

बात से लगाया जा सकता है कि डेढ़ साल की बेहद कम अवधि में ही सुरंग बदहाल हो गया। जगह-जगह से पानी रिसने के कारण फाउंडेशन में कई दरारें आ गईं। पिछले वर्ष जब बारिश का मौसम आया तो पूरी सुरंग पानी से भर गई। 1.3 किलोमीटर लंबी सुरंग की हालत ऐसी हो गई कि यहां से होकर गुजरने पर रोक लगानी पड़ी। बात सिर्फ पानी भरने की नहीं थी, यहां कई अन्य खामियां पाई गईं। दरारें और खराब रोशनी के साथ-साथ एसओएस सिस्टम में खामी इनमें प्रमुख हैं।

एक अंग्रेजी अखबार ने तब दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी से बातचीत के आधार पर रिपोर्ट दी कि प्रगति मैदान टनल में ऐसी खामियां हैं जिन्हें मरम्मत करके दुरुस्त नहीं किया जा सकता है बल्कि इसका पूरा कायाकल्प ही करना होगा। उधर, सार्वजनिक कार्य विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने एलएंडटी को टनल के काम में गंभीर लापरवाही बरतने के आरोप में नोटिस जारी किया। विभाग ने कंपनी से 500 करोड़ रुपये की जमानत राशि की मांग की। हालांकि, काउंटरक्लेम में कंपनी ने भी विभाग से इतनी ही रकम मांग ली।

खामियों को दुरुस्त करने के बाद प्रगति मैदान टनल को अप्रैल के पहले हफ्ते में दोबारा खोला गया था। तब भी पानी जमने के लक्षण दिख रहे हैं। कई जगहों से पानी का रिसाव हो ही रहा है। वैसे तीन जगहों पर जल रिसाव काफी कम हो गया, लेकिन पार्किंग लॉट में स्थिति भयावह है। पीडब्ल्यूडी ने इसी वर्ष मार्च महीने में काम मरम्मती शुरू की थी और अप्रैल में टनल को दुबारा खोला गया था।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा

जो ख़ानदानी रईस हैं वो मिज़ाज रखते हैं सड़को पर नर्म अपना, तुम्हारा लहजा बता रहा है तुम्हारी दौलत नई नई है!

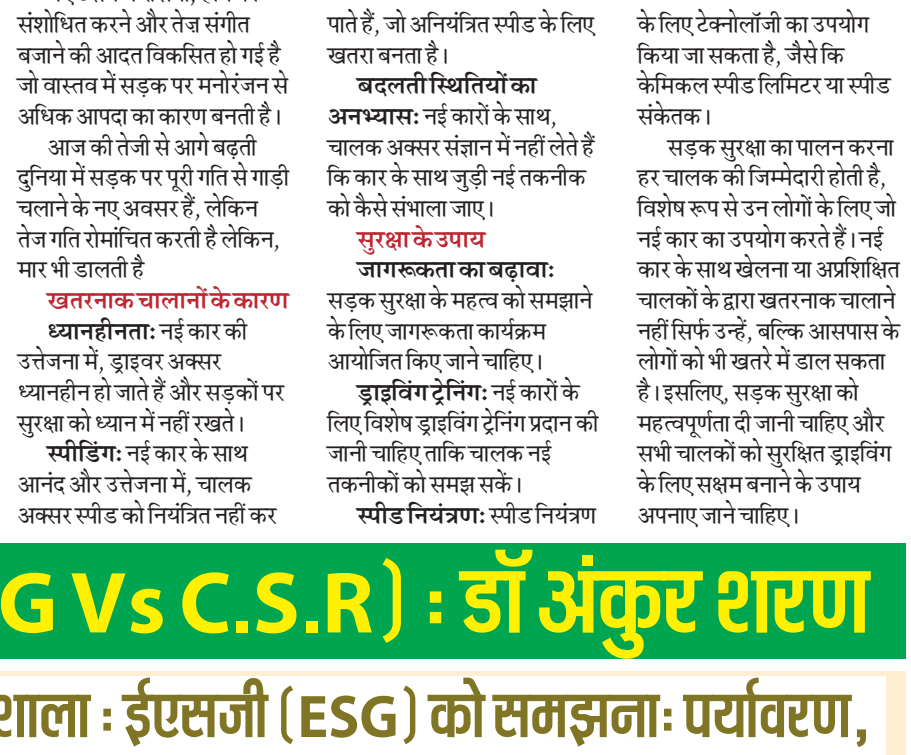

डॉ अंकुर शरण

नई दिल्ली। सड़क सुरक्षा हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो नई कारों का उपयोग करते हैं। नई कारों के साथी बढ़ रहे हैं, जो कि सड़कों पर खतरनाक चालानों को बढ़ावा दे रहे हैं। इस रिपोर्ट में हम सड़क सुरक्षा के महत्व को समझाने और खतरनाक चालानों को कम करने के उपायों पर चर्चा करेंगे।

नए टशन में रोशनी, हॉर्न को संशोधित करने और तेज़ संगीत बजाने की आदत विकसित हो गई है जो वास्तव में सड़क पर मनोरंजन से अधिक आपदा का कारण बनती है।

आज की तेजी से आगे बढ़ती दुनिया में सड़क पर पूरी गति से गाड़ी चलाने के नए अवसर हैं, लेकिन तेज गति रोमांचित करती है लेकिन, मार भी डालती है

खतरनाक चालानों के कारण

ध्यानहीनता: नई कार की उत्तेजना में, ड्राइवर अक्सर ध्यानहीन हो जाते हैं और सड़कों पर सुरक्षा को ध्यान में नहीं रखते।

स्पीडिंग: नई कार के साथ आनंद और उत्तेजना में, चालक अक्सर स्पीड को नियंत्रित नहीं कर

पाते हैं, जो अनियंत्रित स्पीड के लिए खतरा बनता है।

बदलती स्थितियों का अनभ्यास: नई कारों के साथ, चालक अक्सर संज्ञान में नहीं लेते हैं कि कार के साथ जुड़ी नई तकनीक को कैसे संभाला जाए।

सुरक्षा के उपाय

जागरूकता का बढ़ावा: सड़क सुरक्षा के महत्व को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

ड्राइविंग ट्रेनिंग: नई कारों के लिए विशेष ड्राइविंग ट्रेनिंग प्रदान की जानी चाहिए ताकि चालक नई तकनीकों को समझ सकें।

स्पीड नियंत्रण: स्पीड नियंत्रण के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि केमिकल स्पीड लिमिटर या स्पीड संकेतक।

सड़क सुरक्षा का पालन करना हर चालक की जिम्मेदारी होती है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो नई कार का उपयोग करते हैं। नई कार के साथ खेलना या अप्रशिक्षित चालकों के द्वारा खतरनाक चालाने नहीं सिर्फ उन्हें, बल्कि आसपास के लोगों को भी खतरे में डाल सकता है। इसलिए, सड़क सुरक्षा को महत्वपूर्णता दी जानी चाहिए और सभी चालकों को सुरक्षित ड्राइविंग के लिए सक्षम बनाने के उपाय अपनाए जाने चाहिए।

पर्यावरण पाठशाला : ईएसजी बनाम सीएसआर (E.S.G Vs C.S.R) : डॉ अंकुर शरण

कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के गतिशील परिदृश्य में, दो संक्षिप्त शब्द अक्सर खुद को सुर्खियों में पाते हैं: ईएसजी और सीएसआर। यद्यपि वे स्थिरता और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देने के सामान्य लक्ष्य साझा करते हैं, वे अपने दृष्टिकोण और फोकस क्षेत्रों में भिन्न हैं।

ईएसजी की कहानी:

ईएसजी का मतलब पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानदंड है। यह एक समग्र ढांचे का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से कंपनियां प्रमुख स्थिरता मेट्रिक्स पर अपने प्रदर्शन और प्रभाव का मूल्यांकन करती हैं। पर्यावरणीय कारक किसी कंपनी के पारिस्थितिक पदचिह्न को शामिल करते हैं, जिसमें उसके कार्बन उत्सर्जन, संसाधन उपयोग और अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं शामिल हैं। सामाजिक कारक किसी कंपनी के कर्मचारियों, ग्राहकों, समुदायों और व्यापक सामाजिक प्रभावों, जैसे विविधता और समावेशन पहल, श्रम प्रथाओं और सामुदायिक जुड़ाव के साथ संबंधों में गहराई से उतरते हैं। शासन कारक कंपनी के नेतृत्व की संरचना, उसकी पारदर्शिता, जवाबदेही और भ्रष्टाचार विरोधी नीतियों और बोर्ड विविधता सहित नैतिक मानकों के पालन का आकलन करते हैं।

सीएसआर: कॉर्पोरेट नागरिकता की एक कहानी:

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) कॉर्पोरेट नागरिकता का एक दीर्घकालिक स्तंभ रहा है, जो समाज को बेहतर बनाने और नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए कंपनी की स्वैच्छिक पहल पर ध्यान केंद्रित करता है। सीएसआर पहल में अक्सर परोपकार, सामुदायिक विकास परियोजनाएं, स्वयंसेवी कार्यक्रम

और नैतिक सोर्सिंग प्रथाएं शामिल होती हैं। जबकि सीएसआर गतिविधियाँ ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखित हो सकती हैं, वे अक्सर अधिक संकीर्ण रूप से केंद्रित होती हैं और कंपनी के समग्र स्थिरता प्रदर्शन के मूल्यांकन में ईएसजी के व्यापक दृष्टिकोण को शामिल नहीं कर सकती हैं।

द्विभाजन और एकीकरण:

ईएसजी और सीएसआर के बीच मुख्य अंतर कंपनी के संचालन के भीतर उनके दायरे और एकीकरण में निहित है। ईएसजी को मुख्य व्यवसाय रणनीति और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में एकीकृत किया गया है, जो निवेश निर्णयों से लेकर उत्पाद विकास तक सब कुछ प्रभावित करता है। यह कंपनी के डीएनए में अंतर्निहित है, जो इसकी दीर्घकालिक स्थिरता और लचीलेपन को आकार देता है। दूसरी ओर, सीएसआर पहल अक्सर स्टैंडअलोन कार्यक्रम होते हैं, जो मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों के समानांतर संचालित होते हैं और कॉर्पोरेट परोपकार और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से प्रेरित होते हैं।

विकासवादी यात्रा:

जैसे-जैसे व्यवसाय विकसित हो रहे हैं और हितधारक अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग कर रहे हैं, ईएसजी और सीएसआर के बीच की रेखाएं तेजी से धुंधली होती जा रही हैं। कई कंपनियां सार्थक परिवर्तन लाने और दीर्घकालिक मूल्य बनाने के लिए अपने परिचालन में दोनों रूपरेखाओं को सहजता से एकीकृत करने की आवश्यकता को पहचान रही हैं। ईएसजी एक व्यापक लेंस प्रदान करता है जिसके माध्यम से कंपनियां अपने स्थिरता जोखिमों और अवसरों का आकलन और प्रबंधन कर सकती हैं, जबकि सीएसआर कंपनियों को ठोस कार्यों और पहलों के माध्यम से सामाजिक और पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

कॉर्पोरेट जिम्मेदारी की भव्य कथा में, ईएसजी और सीएसआर अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़ी भूमिकाएँ निभाते हैं। जबकि ईएसजी स्थिरता जोखिमों और अवसरों के मूल्यांकन और प्रबंधन के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है, सीएसआर कंपनियों को ठोस कार्यों और पहलों के माध्यम से सामाजिक और पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। ईएसजी और सीएसआर दोनों सिद्धांतों को अपनाकर, कंपनियां सभी हितधारकों के लिए अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत भविष्य बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा शुरू कर सकती हैं।

इसलिए, जैसे-जैसे कंपनियां कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के लगातार बदलते परिदृश्य को आगे बढ़ाती हैं, उन्हें ईएसजी और सीएसआर के सबक पर ध्यान देना चाहिए, उन्हें टिकाऊ विकास और सकारात्मक प्रभाव की कहानी तैयार करने के लिए एक साथ जोड़ना चाहिए।

पर्यावरण पाठशाला : ईएसजी (ESG) को समझना: पर्यावरण, सामाजिक और शासन कारकों के लिए एक सरल मार्गदर्शिका

आज की दुनिया में, व्यवसायों से केवल लाभ कमाने के अलावा और भी कुछ करने की अपेक्षा की जाती है। उनसे पर्यावरण, समाज और शासन प्रथाओं पर उनके प्रभाव पर विचार करने की भी अपेक्षा की जाती है। यहीं पर ईएसजी काम आता है।

ईएसजी का मतलब पर्यावरण, सामाजिक और शासन है। आइए इसे समझे :

पर्यावरण: इसका तात्पर्य यह है कि कोई कंपनी पर्यावरण पर अपने प्रभाव का प्रबंधन कैसे करती है। इसमें कार्बन उत्सर्जन, ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट प्रबंधन और जल उपयोग जैसे कारक शामिल हैं। जो कंपनियां पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देती हैं, उनका लक्ष्य ग्रह पर उनके नकारात्मक प्रभावों को कम करना है और वे नवीकरणीय ऊर्जा, रीसाइक्लिंग कार्यक्रमों और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं में निवेश कर सकती हैं।

सामाजिक: ईएसजी का सामाजिक पहलू इस बात पर केंद्रित है कि एक कंपनी अपने कर्मचारियों, समुदायों और अन्य हितधारकों के साथ कैसे बातचीत करती है। इसमें कार्यस्थल विविधता और समावेशन, श्रम प्रथाएं, मानवाधिकार, सामुदायिक जुड़ाव और ग्राहक संतुष्टि शामिल हो सकते हैं। मजबूत सामाजिक प्रथाओं वाली कंपनियां कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार, स्थानीय समुदायों के लिए समर्थन और हितधारकों के साथ पारदर्शी संचार को प्राथमिकता देती हैं।

शासन: शासन से तात्पर्य किसी कंपनी के प्रबंधन के तरीके से है, जिसमें इसकी नेतृत्व संरचना, कार्यकारी वेतन, शेयरधारक अधिकार और नैतिक मानकों और विनियमों का पालन शामिल है। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि कंपनियां पारदर्शी, नैतिक रूप से और अपने शेयरधारकों और अन्य हितधारकों के प्रति जवाबदेही के साथ काम करें। इसमें बोर्ड की विविधता, स्वतंत्रता और कॉर्पोरेट निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की निगरानी भी शामिल है।

ईएसजी क्यों महत्वपूर्ण है?

जोखिम प्रबंधन: जो कंपनियां ईएसजी कारकों को अपने संचालन में एकीकृत करती हैं, वे संभावित जोखिमों की पहचान करने और उन्हें कम करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं। पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों को संबोधित करके, वे महंगे कानूनी विवादों, नियामक जुर्माने और प्रतिष्ठा क्षति से बच सकते हैं। मजबूत शासन पद्धतियाँ संगठन के भीतर धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और हितों के टकराव को रोकने में भी मदद करती हैं।

दीर्घकालिक स्थिरता: व्यवसायों की दीर्घकालिक सफलता और स्थिरता के लिए ईएसजी विचार महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देकर, कंपनियां पर्यावरणीय आपदाओं, संसाधनों की कमी और सामाजिक अशांति के खिलाफ लचीलापन बना सकती हैं। इसके अलावा, मजबूत प्रशासन संरचना वाली कंपनियां अच्छे रणनीतिक निर्णय लेने की अधिक संभावना रखती हैं जो लंबे समय में शेयरधारकों और हितधारकों को लाभ पहुंचाती हैं।

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: ईएसजी सिद्धांतों को अपनाने से कंपनियों को बाज़ार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिल सकती है। उपभोक्ता, निवेशक और कर्मचारी तेजी से ऐसे व्यवसायों की ओर आकर्षित हो रहे हैं जो स्थिरता, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं। ईएसजी मूल्यों के साथ तालमेल बिठाकर, कंपनियां ग्राहकों को आकर्षित कर सकती हैं, प्रतिभा को आकर्षित कर सकती हैं और पूंजी तक अधिक आसानी से पहुंच बना सकती हैं।

निवेशक की मांग: निवेशक निवेश निर्णय लेते समय ईएसजी कारकों पर तेजी से विचार कर रहे हैं। वे मानते हैं कि मजबूत ईएसजी प्रथाओं वाली कंपनियां दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करने और जोखिमों को कम करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। परिणामस्वरूप, ईएसजी-केंद्रित निवेशों, जैसे टिकाऊ फंड और सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश पोर्टफोलियो की मांग बढ़ रही है। जो कंपनियां ईएसजी विचारों को नजरअंदाज करती हैं उन्हें पूंजी तक पहुंचने या निवेश आकर्षित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

ईएसजी कारक व्यवसायों के संचालन के तरीके और हितधारकों द्वारा समझे जाने वाले तरीके को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपनी रणनीतियों में पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी विचारों को शामिल करके, कंपनियां अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा सकती हैं, जोखिम कम कर सकती हैं और शेयरधारकों और समग्र रूप से समाज के लिए दीर्घकालिक मूल्य सृजन कर सकती हैं।

डायबिटीज रोगियों के लिए काफी फायदेमंद हैं ये 3 तरह की रोटियां, आज ही डाइट में शामिल करें

डायबिटीज के मरीजों अपनी सेहत का ख्याल रखना बेहद जरुरी है। आइए जानते हैं डायबिटीज में किस आटे की रोटी खानी चाहिए। वैसे तो डायबिटीज का कोई परमानेंट इलाज नहीं है लेकिन इस गंभीर बीमारी को लाइफस्टाइल में बदलाव करके और सही खानपान से कंट्रोल किया जा सकता है। आइए आपको बताते हैं डायबिटीज में किसकी रोटी खानी चाहिए?

डायबिटीज की बीमारी आजकल हर किसी में तेजी से फैल रही है। लगभग हर उम्र के लोग इस गंभीर बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। खराब खानपान और बिगड़ी लाइफ स्टाइल के कारण डायबिटीज का खतरा बना रहता है। डायबिटीज के मरीज अगर अपने खानपान में सुधार नहीं करते हैं तो इससे उनके शरीर में ब्लड शुगर लेवल बिगड़ सकता है, जिससे कई और समस्याएं हो सकती हैं। वैसे तो डायबिटीज का कोई परमानेंट इलाज नहीं है लेकिन इस गंभीर बीमारी को लाइफस्टाइल में बदलाव करके और सही खानपान से कंट्रोल किया जा सकता है। आइए आपको बताते हैं डायबिटीज में किसकी रोटी खानी चाहिए?

राजगिरा आटा

व्रत के दौरान कई घरों में इसका इस्तेमाल किया जाता है। राजगिरा को रामदाना और अमरंथ भी कहा जाता है। राजगिरा आटा डायबिटीज के रोगियों के लिए बेहद फायदेमंद हो सकता है। इसमें कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले राजगिरा के आटे में कार्बोहाइड्रेट की कम मात्रा होती है, ऐसे में यह आटा शरीर में ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है। राजगिरा के आटे से रोटी, चीला आदि बनाए जा सकते हैं। इसके अलावा इससे बने दलिया और लड्डू भी हेल्दी और टेस्टी होते हैं।

रागी आटा

हेल्दी रहने के लिए आजकल कई लोग रागी के आटे का इस्तेमाल करते हैं। रागी को मंडुआ भी कहा जाता है, इसके आटे की रोटी खाने से डायबिटीज मरीज जल्दी ठीक होने लगता है। रागी में कैल्शियम और आयरन के साथ फाइबर और प्रोटीन की मात्रा अच्छी होती है। इसे खाने से जल्दी भूख नहीं लगती है। रागी के आटे से रोटी के अलावा डोसा, चीला और लड्डू भी बनाए जा सकते हैं। ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने के लिए अपने आहार में जरुर शामिल करें।

जौ आटा

डायबिटीज के रोगियों को ब्लड लेवल के साथ ही अपने वजन को भी कंट्रोल में रखना होता है, ऐसे में जौ का आटा उनके लिए फायदेमंद होता है। जौ में भरपूर मात्रा में फाइबर होता है, जिससे लंबे समय तक पेट भरा रहता है। डायबिटीज के साथ ही ये वजन कंट्रोल करने के लिए भी जौ का आटा फायदा कर सकता है।

वजन घटाने से लेकर कब्ज में बेहद फायदेमंद हैं हरड़, जानें इस्तेमाल करने का सही तरीका

औषधीय गुणों से भरपूर हरड़ वजन घटाने के साथ-साथ कब्ज में राहत पाने के लिए मदद कर सकता है। जानें इसका प्रयोग कैसे करें। अगर आप वजन कम करने और पेट की कब्ज जैसी समस्याओं से राहत पाने के लिए बहुत कुछ आजमा लिया, लेकिन एक बार औषधीय गुणों से भरपूर हरड़ का उपयोग करें।

पेट की समस्याओं से काफी बीमारियां होती है। पेट संबंधित समस्याओं का सबसे बड़ा कारण है तेजी से बदलती लाइफस्टाइल और खानपान की आदतें। आप अपने आस-पास देखेंगे तो कोई न कोई व्यक्ति बढ़े हुए वजन और मोटापे का शिकार है या कब्ज जैसी समस्याओं से परेशान रहता है। वजन बढ़ाना काफी आसान होता है लेकिन इसे कम करने में लोगों की हालत खराब हो जाती है। अगर आप वजन कम करने और पेट की कब्ज जैसी समस्याओं से राहत पाने के लिए बहुत कुछ आजमा लिया, लेकिन एक बार औषधीय गुणों से भरपूर हरड़ का उपयोग करें। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि कैसे हरड़ की मदद से वजन घटाने और कब्ज की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

वजन घटाने के लिए हरड़ का उपयोग कैसे करें

हरड़ में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर होते है। हरड़ पाउडर आपको आसानी से दवाओं के दुकान पर मिल जाएगा। वजन घटाने के लिए इसका सेवन गुनगुने पानी के साथ किया जा सकता है। इसके लिए 1 गिलास गुनगुने पानी में एक छोटी चम्मच हरड़ पाउडर डालकर मिलाएं और इसे पिएं। रेगुलर इसका सेवन करने से आपको जल्द असर दिखने लगेगा। इस बात ध्यान रखें कि सिर्फ हरड़ खाने से वजन नहीं घटेगा इसके लिए आपको हेल्दी लाइफस्टाइल मेंटेन करनी है और घर का बना ताजा भोजन ही करना है। अपनी डाइट में अनाज से ज्यादा फलों और सब्जियों को जरुर शामिल करें। इसके साथ ही रोजाना योग और एक्सरसाइज भी करें, इससे वजन भी घटेगा और शरीर में अच्छे हार्मोंस भी रिलीज होंगे।

कब्ज के लिए हरड़ का उपयोग कैसे करें

आमतौर पर कई लोगों का कब्ज और पाचन संबंधित समस्याएं जुड़ी रहती हैं, उन्हें 4-6 ग्राम पाउडर में बराबर मात्रा में मिश्री मिलकार सुबह-शाम भोजन के बाद सेवन करना चाहिए। आप चाहे तो मिश्री की जगह चीनी का प्रयोग कर सकते हैं। हरड़ और मिश्री के सेवन से पाचन-शक्ति बढ़ती है और कब्ज की समस्या दूर होती है।

बच्चों में दिख रहे ये लक्षण तो हो जाएं सतर्क, हो सकता है ल्यूकेमिया का संकेत

कैंसर से पीड़ित बच्चे ग्लोबली चाइल्ड डेथ का पांचवा मुख्य कारण है। वहीं 15 साल से कम उम्र के बच्चों में ल्यूकेमिया यानी की ब्लड कैंसर का अधिक खतरा होता है। यह ब्लड सेल्स असर डालता है।

आजकल बच्चों में कई बीमारियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। वहीं बच्चों में कैंसर के मामले भी अधिक देखने को मिल रहे हैं। भारत में हाल ही में राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम की एक रिपोर्ट के मुताबिक 0 से 14 साल तक के बच्चों में कैंसर का 4 फीसदी खतरा होता है।

कैंसर से पीड़ित बच्चे ग्लोबली चाइल्ड डेथ का पांचवा मुख्य कारण है। वहीं 15 साल से कम उम्र के बच्चों में ल्यूकेमिया यानी की ब्लड कैंसर का अधिक खतरा होता है। यह ब्लड सेल्स असर डालता है। हांलाकि इसके लक्षण बच्चों में जल्दी नजर आ रहे हैं। वहीं कुछ मामलों में इसके लक्षण काफी समय बाद दिखाई देते हैं।

यदि समय रहते इन लक्षणों को पहचान लिया जाए, तो बच्चों की जान बचाना काफी हद तक संभव हो जाता है। ऐसे में इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बच्चों में ल्यूकेमिया के शुरूआती लक्षणों के बारे में बताने जा रहे हैं।

बच्चों में ल्यूकेमिया के लक्षण

बच्चों में ल्यूकेमिया के लक्षणों को पहचान पाना काफी मुश्किल होता है। क्योंकि कई बार इसके लक्षण अन्य सामान्य बीमारियों जैसे बुखार की तरह लगते हैं।

यदि आपका बच्चा थका हुआ या सुस्त रहता है, पूरी नींद होने के बाद भी आलस बना रहता है। तो यह ब्लड कैंसर का लक्षण हो सकता है।

इसके अलावा मसूड़ों से नाक से खून आना या स्किन पर लाल रंग के छोटे-छोटे स्पॉट होना भी ल्यूकेमिया का एक लक्षण है।

ल्यूकेमिया के कारण पीठ या हड्डियों में तेज दर्द हो सकता है।

बगल या गले पर गांठ होना, त्वचा के अंदर लिम्फ नोड्स महसूस होना आदि ल्यूकेमिया का संकेत हो सकता है। वहीं इनमें दर्द नहीं होता है अगर यह खुद से नहीं घुलती है।

बेचैनी, सूजन या पेट दर्द भी इसकी निशानी हो सकती है। इसके अलावा लिवर या शरीर के अन्य किसी अंग में सूजन भी महसूस हो सकती है।

यदि बच्चे को भूख कम लग रही है या उसका तेजी से वेट कम हो रहा है, तो यह भी कैंसर का लक्षण हो सकता है।

लगातार या बार-बार आने वाला फीवर भी कैंसर की तरफ इशारा करता है, इसलिए इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

फेमस फिटनेस ट्रेनर ने दावा किया है कि वर्कआउट के दौरान ताकत के लिए आपको ओआरएस+नींबू की आवश्यकता होती है, 'मैं इसकी गारंटी दे सकता हूं'

सोशल मीडिया पर फिटनेस संबंधित कई वीडियो वायरल देखने को मिल जाते है। ऐसे में फेमस फिटनेस ट्रेनर नितेश सोनी की वीडियो काफी वायरल हो रही है। इसमें वह वर्कआउट टिप्स साझा करते हुए कह रहे है कि नींबू के रस के साथ मिश्रित ओआरएस का एक पैकेट मांसपेशियों की वृद्धि करेगा। इस पर एक्सपर्ट की अपनी अलग राय है।

यदि आप अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं, तो आपने फिटनेस ट्रेनर नितेश सोनी के आसान स्वास्थ्य और वर्कआउट टिप्स साझा करते हुए वायरल वीडियो देखे होंगे। हमने भी ऐसा ही कियाः इस बार वह इस बारे में बात कर रहे थे कि कैसे नींबू के रस के साथ मिश्रित ओआरएस का एक पैकेट मांसपेशियों की वृद्धि में मदद कर सकता है, मांसपेशियों की थकान को रोक सकता है और दर्द को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है - महंगे बीसीएए (ब्रांच्ड की तरह -चेन अमीनो एसिड) करते हैं, जिस पर कई फिटनेस एडिक्ट्स भरोसा करते हैं। सोनी ने कहा, "दो दिन के लिए ले लो. आप बीसीएए का उपयोग बंद कर देंगे। मैं इसकी पुष्टि कर सकता हूं,"।

आइए पहले समझें कि बीसीएए क्या हैं

ब्रांच्ड -श्रृंखला अमीनो एसिड, या बीसीएए, महत्वपूर्ण पोषक तत्व हैं जो शरीर को भोजन, विशेष रूप से मांस, डेयरी और फलियां में प्रोटीन से मिलते हैं। "ल्यूसीन, आइसोल्यूसीन और वेलिन तीन बीसीएए हैं जो मांसपेशियों के प्रोटीन के संश्लेषण और व्यायाम के दौरान ऊर्जा के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं। एक्सपर्ट के मुताबिक, "मांसपेशियों की रिकवरी में तेजी लाने, व्यायाम के बाद दर्द को कम करने और संभवतः प्रदर्शन में सुधार करने के लिए बॉडीबिल्डर और एथलीटों द्वारा अक्सर बीसीएए सप्लीमेंट का उपयोग किया जाता है।"

इसके विपरीत, ओआरएस एक ग्लूकोज और इलेक्ट्रोलाइट समाधान है जिसका उपयोग उल्टी, दस्त या जोरदार व्यायाम के कारण होने वाले हाइड्रेशन से राहत देने के लिए किया जाता है। एक्सपर्ट के अनुसार, "नींबू ओआरएस के स्वाद में सुधार कर सकता है और अतिरिक्त विटामिन सी जोड़ सकता है, जिसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं।"

क्या यह संयोजन बीसीएए की तरह ही काम करता है?

नींबू के साथ ओआरएस का बीसीएए अनुपूरण के समान लाभ नहीं हो सकता है, इस तथ्य के बावजूद कि यह व्यायाम के दौरान खोए गए इलेक्ट्रोलाइट्स को बदलने में सहायता कर सकता है और ग्लूकोज सामग्री से कुछ ऊर्जा प्रदान कर सकता है। मांसपेशियों के मेटाबॉलिज्म और मरम्मत के लिए आवश्यक कुछ अमीनो एसिड, विशेष रूप से लंबे समय तक या कठिन व्यायाम के बाद, नींबू और ओआरएस संयोजन में नहीं पाए जाते हैं।"

एक्सपर्ट के मुताबिक मांसपेशियों की मरम्मत और प्रदर्शन के संदर्भ में, बीसीएए की खुराक विशेष रूप से धीरज रखने वाले एथलीटों या उच्च तीव्रता वाले व्यायाम करने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। हालांकि, ओआरएस + नींबू आकस्मिक व्यायाम करने वालों या अच्छी तरह से संतुलित, उच्च-प्रोटीन आहार खाने वालों के लिए व्यायाम के दौरान जलयोजन और ऊर्जा प्रतिस्थापन के लिए पर्याप्त हो सकता है।

दोनों सप्लीमेंट्स की शरीर में अलग-अलग भूमिका होती है। "वे एक-दूसरे के समकक्ष या विकल्प नहीं हैं। बीसीएए सप्लीमेंट महंगे हैं लेकिन ओआरएस इसका सस्ता विकल्प नहीं है क्योंकि इसमें एक-दूसरे से अलग तरह के कार्य होते हैं।

क्या ध्यान रखें?

पोषण संबंधी प्राथमिकताओं, फिटनेस उद्देश्यों और अद्वितीय मांगों के आधार पर सर्वोत्तम कार्रवाई का चयन करने के लिए एक पोषण विशेषज्ञ की सलाह महत्वपूर्ण है। डॉ. शर्मा ने कहा, "इसके अलावा, पर्याप्त प्रोटीन स्रोतों के साथ संतुलित आहार पर जोर देने से स्वाभाविक रूप से अधिकतम मांसपेशियों के प्रदर्शन और रिकवरी के लिए आवश्यक बीसीएए की आपूर्ति हो सकती है।"

इस तरह से Depression करें दूर, बस अपनाएं ये आसान तरीके

भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास खुद के लिए जरा सा भी समय नहीं है। ऐसे में स्ट्रेस और डिप्रेशन बेहद आम समस्या हो चुकी है। डिप्रेशन इन दिनों सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। इसकी वजह से कई तरह की बीमारियां बढ़ने का खतरा रहता है। इसका निगेटिव असर पर्सनल, प्रोफेशनल लाइफ के साथ ही यह आपका रिलेशनशिप खराब कर सकता है।

आजकल डिप्रेशन का शिकार होने की तादाद बहुत बढ़ गई है। सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में अवसाद ग्रस्त लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसे में कभी-कभी एंटीडिप्रेसेंट दवाएं भी लोग लेते हैं। पर इसका उपयोग बहुत दिनों तक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। इन दवाओं से बच्चों का इलाज नहीं किया जाना चाहिए।

भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास खुद के लिए जरा सा भी समय नहीं है। ऐसे में स्ट्रेस और डिप्रेशन बेहद आम समस्या हो चुकी है। आइए आपको बताते हैं डिप्रेशन दूर करने के कुछ आसान तरीके।

ग्रीन टी पिएं

दूध वाली चाय की जगह ग्रीन टी का सेवन करना बेहद जरुरी है। यह ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को कम करता है। इसे पीने से आपको काफी रिलैक्स फील होता है। इससे आपकी मेंटल हेल्थ पहले से बेहतर होगी।

एक्सरसाइज जरुर करें

डिप्रेशन को दूर करने के लिए आपको कार्डियो एक्सरसाइज करनी चाहिए। इससे तनाव और डिप्रेशन से काफी आराम मिलता है। आप रोजाना कार्डियो एक्सरसाइज जरुर करें। यह सचमुच में आपको पॉजिटिव रहने में मदद करता है।

डीप ब्रीदिंग करें

डिप्रेशन को दूर करने के लिए आप डीप ब्रीदिंग की मदद ले सकते हैं। इससे आपका मन शांत रहता है और आप चिड़चिड़ेपन या गुस्से से बच सकते हैं। प्रतिदिन आप मेडिटेशन जरुर करें इससे आपको काफी आराम मिलेगा।

नींद लेना बहुत जरुरी

किसी भी काम को ठीक करने से पहले शरीर में उर्जा की बहुत जरुरत होती है। ऐसे मे अगर आपको जरुरत के मुताबिक नींद नहीं मिल रही है तो ये अवसाद का रूप भी ले सकती है। सबसे पहले अवसाद को मिटाने के लिए कम से कम आठ घंटे की नींद लें। नींद पूरी होगी तो दिमाग में स्फूर्ति होगी और आपको पूरे दिन तरोताजा महसूस होता रहेगा। इस स्थिति मे आपको नकारात्मक भाव मन में कम आएंगे।

अपनी फेवरेट एक्टिविटी जरुर करें

तनाव या डिप्रेशन से आराम पाने के लिए आपको अपना मनपसंद काम करना चाहिए। इससे आपको काफी मदद मिलेगी। आप चाहे तो कुकिंग, डांसिंग, सिंगिंग और गार्डनिंग कर सकते हैं। अपनी फेवरेट एक्टिविटी करने से तनाव कम होता है। मन काफी खुश भी होता है।

डिप्रेशन को दूर करने के लिए आपको कार्डियो एक्सरसाइज करनी चाहिए। इससे तनाव और डिप्रेशन से काफी आराम मिलता है। आप रोजाना कार्डियो एक्सरसाइज जरुर करें। यह सचमुच में आपको पॉजिटिव रहने में मदद करता है।

दिल्लीवालों ने पूरे अप्रैल शुद्ध हवा में ली सांस, नौ वर्ष में दूसरी बार हुआ ऐसा; पहली बार तब...

अप्रैल का महीना इस बार अपेक्षाकृत ठंडा ही नहीं बल्कि प्रदूषण रहित भी रहा है। 2016 से 2024 यानी नौ वर्षों के दौरान दूसरी बार ऐसा हुआ है जब पूरे माह में ज्यादातर दिन दिल्ली में हवा की गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में रही है। राजधानी वासी लगातार बेहतर हवा में सांस ले रहे हैं।

प्रगति मैदान सुरंग दोपहिया वाहन सवारों के लिए खतरानाक साबित हो रही है। जून 2022 में हुए उद्घाटन से अब तक दो लोगों की यहां सड़क दुर्घटना में मौत हो चुकी है। पहले मई 2023 में एक युवक की पिलर से टकराने पर मौत हुई थी। वहीं बीते शनिवार को बाइक सवार दिल्ली पुलिस के एएसआई एनके पवित्रन की भी मौत हुई है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अप्रैल का महीना इस बार अपेक्षाकृत "ठंडा" ही नहीं, बल्कि प्रदूषण रहित भी रहा है। 2016 से 2024 यानी नौ वर्षों के दौरान दूसरी बार ऐसा हुआ है, जब पूरे माह में ज्यादातर दिन दिल्ली में हवा की गुणवत्ता "मध्यम" श्रेणी में रही है।

राजधानी वासी लगातार बेहतर हवा में सांस ले रहे हैं। पर्यावरणविदों ने इस राहत का श्रेय मौसम का दिया है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) से मिले आंकड़ों के अनुसार, इस बार सोमवार तक अप्रैल के 29 में से 26 दिन एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) "मध्यम" एवं केवल तीन दिन "खराब" श्रेणी में दर्ज किया गया। मंगलवार को माह के अंतिम दिन भी कमोबेश यही श्रेणी बने रहने के आसार हैं।

किस वर्ष साफ रहा अप्रैल

पिछले वर्षों सालों में अप्रैल माह के प्रदूषण पर निगाह दौड़ाएं तो 2016, 2017, 2018, 2019, 2021 और 2022 के मुकाबले 2023 कहीं साफ रहा। लेकिन 2020 का अप्रैल सबसे बेहतर रहा था। देशव्यापी लॉकडाउन के कारण 30 में से 16 दिन अच्छी जबकि 14 दिन मध्यम श्रेणी की हवा रही।

पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार, इस वर्ष अप्रैल में वायु प्रदूषण से मिली राहत की मुख्य वजह मौसम की मेहरबानी रही। पश्चिमी विक्षोभों के असर से तेज हवा भी चलती रही एवं बीच बीच में हल्की वर्षा भी होती रही। इससे प्रदूषण कण वातावरण में

जमने की बजाए छंटते चले गए।

2016 से 2024 के दौरान अप्रैल में कितने दिन किस श्रेणी की रही हवा

वर्ष	संतोषजनक	मध्यम	खराब	बहुत खराब
2016	0	02	23	05
2017	0	13	11	06
2018	01	07	18	04
2019	0	11	17	01
2020	16	14	0	0
2021	0	18	11	01
2022	0	0	28	02
2023	17	13	0	0
2024	26	03	0	0

(2024 का डेटा 29 अप्रैल तक का है)

हवा की गति में सुधार के कारण यह अप्रैल पिछले वर्षों से बेहतर रहा है। बीच बीच में हुई हल्की बरसात से भी वायु प्रदूषण में कमी आई है। मेरा तो यह भी मानना है कि राजधानी के प्रदूषण की दवा ही हवा और बरसात है। -डॉ. दीपांकर साहा, पूर्व अपर निदेशक, सीपीसीबी

सोमवार को दो इलाकों की हवा रही "बहुत खराब"

राजधानी के दो इलाकों की हवा सोमवार को "बहुत खराब" श्रेणी में पहुंच गई। यहां का एक्यूआई 300 अंक से ऊपर दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक, यूं सोमवार को दिल्ली का समग्र एक्यूआइ 224 रहा। इस स्तर की हवा को "खराब" श्रेणी में रखा जाता है। अगले दो दिनों के बीच भी धूल उड़ाने वाली हवा के चलने का अनुमान है। इसे देखते हुए वायु गुणवत्ता की स्थिति खराब रहने की आशंका है।

दिल्ली की प्रगति मैदान सड़क सुरंग में रफ्तार पर लगाम, स्पीड लिमिट तय, तेज दौड़ाने पर कटेगा चालान

नई दिल्ली। प्रगति मैदान सुरंग दोपहिया वाहन सवारों के लिए खतरानाक साबित हो रही है। जून 2022 में हुए उद्घाटन से अब तक दो लोगों की यहां सड़क दुर्घटना में मौत हो चुकी है। पहले मई 2023 में एक युवक की पिलर से टकराने पर मौत हुई थी। वहीं, बीते शनिवार को बाइक सवार दिल्ली पुलिस के एएसआई एनके पवित्रन की भी मौत हुई है।

इसके बाद इसके अंदर वाहन चालकों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। हालांकि रविवार को हुई सड़क दुर्घटना को लेकर लोक निर्माण विभाग ने कहा है कि यह दुर्घटना किसी वाहन द्वारा पीछे से टक्कर मारने के कारण हुई है।

पुलिस मामले की कर रही जांच

सुरंग में पानी का रिसाव नहीं हो रहा था और न ही पानी में कोई वाहन फिसला है। सूचना मिलने पर मौके पर एंबुलेंस मंगवाई गई थी और घटनास्थल पर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी पहुंचे थे। इससे संबंधित वीडियो के माध्यम से पुलिस मामले की जांच कर रही है।

तेज रफ्तार वाहन बन रहे समस्या

बताया जा रहा है कि सुरंग में तेज रफ्तार वाहन समस्या बन रहे हैं, जिसे देखते हुए सुरंग में तेज रफ्तार वाहनों पर लगाम लगाने की तैयारी चल रही है। इसके लिए इसके अंदर स्वचालित नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) वाले कैमरे लगेंगे, जो वाहन की निर्धारित से अधिक रफ्तार होने पर चालान काट देंगे।

सुरंग में लगे हैं कैमरे

इसको लेकर यातायात पुलिस ने प्रक्रिया शुरू कर दी है। सुरंग में वर्तमान में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) द्वारा यहां 50 से अधिक सामान्य कैमरे लगाए गए हैं, जिनसे इसके अंदर की गतिविधि पर नजर रखी जा रही है।

रफ्तार के नियम का नहीं हो रहा पालन

बता दें कि यातायात पुलिस की ओर से सुरंग सड़क में वाहनों की रफ्तार 30 किलोमीटर प्रतिघंटा निर्धारित है, लेकिन इसका पालन नहीं हो रहा है। सामान्य तौर पर इसके अंदर वाहनों की रफ्तार इससे दो गुनी तक ही रहती है। ऐसे में कई बार यहां हादसे हो चुके हैं।

ज्यादातर वाहन 60 की रफ्तार से चल रहे

पीडब्ल्यूडी का भी कहना है कि सुरंग में अधिक रफ्तार में समस्या कभी भी खड़ी हो सकती है। क्योंकि अक्सर वाहनों की रफ्तार 60 के आसपास ही रहती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2022 में 19 जून को सुरंग का उद्घाटन किया था। लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ने इसका निर्माण किया है। इस परियोजना पर 777 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। सुरंग की डिजाइनिंग भी एलएंडी ने ही की थी।

उपभोक्ता के परिसर की सर्विस केबल कटी होना या फिर मीटर की बॉडी टूटी मिलना बिजली चोरी का साक्ष्य नहीं, अब ऐसे दर्ज नहीं होगी एफआइआर

क्या भारत देश के अन्य राज्यों की सरकारें भी करेगी यह घोषणा, बड़ा एवम् न्यायिक सवाल? (उपभोक्ता के परिसर की सर्विस केबल कटी होना या फिर मीटर की बॉडी टूटी मिलना बिजली चोरी का साक्ष्य नहीं, नहीं होगी एफआइआर)

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। बिजली विभाग आशंका के आधार पर अब उपभोक्ता के खिलाफ बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज नहीं करा पाएगा। चेकिंग के दौरान यदि किसी उपभोक्ता के परिसर की सर्विस केबल कटी है या फिर मीटर की बॉडी टूटी मिलना बिजली चोरी के साक्ष्य नहीं है। ऐसे मामलों में लेसा कर्मचारी पुरानी सर्विस केबल को बदलकर आर्मर्ड केबल के माध्यम से नये मीटर को परिसर के बाहर स्थापित करेंगे। साथ ही अगले तीन माह के बिजली उपभोग की तुलना पिछले वर्ष सामान महीनों के उपभोग से करके असिस्मेंट बिल बनाएंगे। नवविकसित क्षेत्रों में बिजली कनेक्शन के लिए अब किसी से एनओसी की जरूरत नहीं होगी। विभाग आवेदक को परिसर से निकट की लाइन से एक्सटेंशन के लिए न्यूनतम एस्टीमेट पर कनेक्शन देगा। मध्यांचल विद्युत निगम के एमडी

भवानी सिंह ने गत शनिवार को मुख्य अभियंताओं (वितरण) के लिए आदेश जारी किया है। बिजली चेकिंग के नाम पर लेसा अब उपभोक्ताओं का शोषण नहीं कर सकेगा। किसी परिसर पर जांच के दौरान यदि सर्विस केबल एक अथवा अधिक स्थानों पर कटी है, तो बिजली चोरी का पर्याप्त साक्ष्य नहीं। **परिसर के बाहर आर्मर्ड केबल से नये मीटर लगाए जाएं।** बिजली उपभोक्ता परिसर से उतारे गये मीटर की ब्रॉट-इन के आधार पर विद्युत अधिनियम की धारा-135 के अंतर्गत मीटर टेम्पर का केस करने से पूर्व लैब में मीटर की जांच की जाए। मीटर टेम्पर के प्रमाण के अभाव में केवल मीटर बॉडी सील टूटी होना या किसी एलईडी का लेग कटा होना अथवा मीटर में छेड़छाड़ का संदेह मात्र होना मुकदमें और असेसमेंट का पर्याप्त आधार नहीं है। **बिजली कनेक्शन के लिए एनओसी की जरूरत नहीं।** मध्यांचल निगम के एमडी भवानी ने आदेश दिया कि बिजली लाइन के निर्माण के लिए चाहे पूर्व में किसी निजी आवेदक द्वारा जमा योजना में धनराशि जमा कराई गई हो। इसके बावजूद निर्मित लाइन अब डिस्ट्रीब्यूशन लाइसेंसी की संपत्ति है। डिस्ट्रीब्यूशन लाइसेंसी उससे किसी को भी विद्युत कनेक्शन दे सकता है। इलेक्ट्रिसिटी कोड में इसके लिए मूल जमाकर्ता की एनओसी (कंसेंट) लेने का कोई प्रावधान नहीं है।

बीएल शर्मा 'प्रेम' की बेटी निवेदिता प्रेम भी उत्तर पूर्वी लोकसभा सीट से(आरजेपी) से चुनाव लड़ सकती है

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। पूर्वी दिल्ली से दो बार के सांसद रहे बैकुंठ लाल शर्मा 'प्रेम' (बीएल शर्मा) की बेटी निवेदिता शर्मा 'प्रेम' भी उत्तर पूर्वी दिल्ली से लोकसभा का चुनाव लड सकती है। निवेदिता शर्मा ने (राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी) सत्य को जॉइन कर लिया है।और अब वह इसी पार्टी के झंडे तले बीजेपी के मनोज तिवारी और कांग्रेस के कन्हैया कुमार के सामने अपनी राजनीतिक पारी के तहत डटने की तैयारी में है।

निवेदिता ने चुनाव प्रचार के तहत पोस्टर बैनर समेत डोर टू डोर कैंपेन भी शुरू कर दिया है। इस संवाददाता द्वारा पूछे जाने पर कि आप तो बीजेपी में है,तो फिर आप (राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी) सत्य से कैसे लड सकती है ?क्या आपने बीजेपी से इस्तीफा दे दिया है? इस पर उन्होंने तपाक से कहा कि मुझसे जब भी बीजेपी से इस्तीफा मांगा जाएगा ,तो मैं तुरंत इस्तीफा दे दूंगी। आप तो बीजेपी के प्रत्यक्षी मनोज तिवारी के ही खिलाफ खडी हैं। ये तो पार्टी से बगावत माना जाएगा। इस पर निवेदिता ने बेलाग साफ कहा कि मेरी मनोज तिवारी से बात हो गई है। उन्हें मालूम है। आप राजनीति पारी की शुरूआत पार्षद या विधायक की जगह सीधे सांसद का ही क्यों चुनाव लड रही है? वोटरों तक पहचान बनाने के लिए नीचे से शुरूआत होनी चाहिए।

इस पर उन्होंने तपाक से कहा कि सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज भी तो सिर्फ छह महीने पहले बीजेपी में आई है। उन्हें भी तो पार्टी ने सीधे नई दिल्ली से सांसद के लिए टिकट दे दिया है।लेकिन बीजेपी ने मेरे पिताजी द्वारा पार्टी की सेवा को बिल्कुल नजरअंदाज कर उनके परिवार को एकदम लावारिस छोड दिया है।

बता दें कि बैकुंठ लाल शर्मा 'प्रेम' ने पहली बार 1996 में पूर्वी दिल्ली में कांग्रेस के बेताज बादशाह कहलाने वाले एचकेएल भगत को हरा कर सबको हैरान कर दिया था। किसी जमाने में इंदिरा गांधी के दायना हाथ में शुमार हर कृष्ण लाल भगत को धूल चटा दी थी।इसके बाद 11वीं लोकसभा साल 2009 में फिर दोबारा बी एल शर्मा प्रेम ने यहीं से जीत दर्ज की थी। उल्लेखनीय है कि बी एल शर्मा प्रेम विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री,कुशल संगठक, अखंड - हिन्दुस्तान मोर्चा के संस्थापक थे। उन्होने अमृत छकने के बाद सिख धर्म को अपना लिया और अपना नाम शेर सिंह रख लिया था। उनको बैकुंठ लाल शर्मा प्रेम 'शेर सिंह के नाम से जाना जाता था। आज निवेदिता शर्मा के पिता बी एल शर्मा प्रेम सिंह शेर और माता का निधन हो चुका है। निवेदिता ने बताया कि उनकी माता का देहात हुए 13 महीने बीत चुके हैं,लेकिन, माता की पेंशन आज तक नहीं बनी है। वह स्कूल में टीचर के पद पर कार्यरत थी। निवेदिता के मुताबिक उन्होंने पेंशन को लेकर दिल्ली सरकार के बडे अधिकारियों से लेकर बीजेपी के भी अधिकारियों को भी कई पत्र लिख चुकी है। बावजूद इसके आज तक पेंशन नहीं लगी है।इससे लगता है कि मुझे आज पार्टी द्वारा लावारिस की तरह ट्रीट किया जा रहा है। इससे मुझे मानसिक रूप से बेहद दुख पहुंचा है। बीजेपी दवारा लगातार अनदेखा किए जाने से खफा होकर निवेदिता शर्मा ने भी उत्तर पूर्वी दिल्ली से लोकसभा का चुनाव लडने का फैसला कर लिया है। बता दें कि (राष्ट्रवादी जनलोकपाल पार्टी-सत्य) के राष्ट्रीय संयोजक शेर सिंह राणा है।(फूलन देवी के पति) वहीं पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सत्यपाल सिंह सिसोदिया हैं।

पर्यावरण पाठशाला : पक्षियों को बचाने के लिए अपने बालकनी, पेड़ों के पास दाना पानी रखें - अंकुर

गर्मियों का मौसम आते ही पक्षियों की समस्याओं का समय शुरू हो जाता है।

जल, खाना, और ठंडे स्थानों की कमी के कारण पक्षियों को बड़ी मुश्किलें होती हैं। लेकिन हम सभी अपने छोटे से कदमों से उनकी मदद कर सकते हैं।

पक्षियों को बचाने के लिए एक सरल तरीका है - अपने बालकनी और पेड़ों के पास पानी और खाना रखना। यह काम अधिकांश लोगों के लिए संभव है और यह बहुत ही प्रभावी उपाय है।

पहले बात तो यह कि बालकनी पर एक पानी की बर्तन रखें। यह बर्तन पक्षियों के लिए जल का स्रोत के रूप में काम करेगा। इसे नियमित रूप से भरते रहें ताकि पक्षियों को प्रतिदिन पानी की आवश्यकता पूरी हो सके।

दूसरे, आप अपने बालकनी और पेड़ों के पास खाना रख सकते हैं। आप चावल के दाने, रोटी के छिलके, फल के छिलके आदि रख सकते हैं। यह पक्षियों को एक स्थिर खाद्य स्रोत प्रदान करेगा और उन्हें भूखे नहीं रहने देगा।

इस गर्मियों, हमें अपने चरणों को बढ़ाने की आवश्यकता है और पक्षियों को संरक्षित रखने के लिए अपना योगदान देने का समय है। एक छोटा कदम उनके लिए बड़ा सहारा हो सकता है।

यह समय है कि हम सभी अपने बालकनी और पेड़ों के पास पानी और खाना रखें और

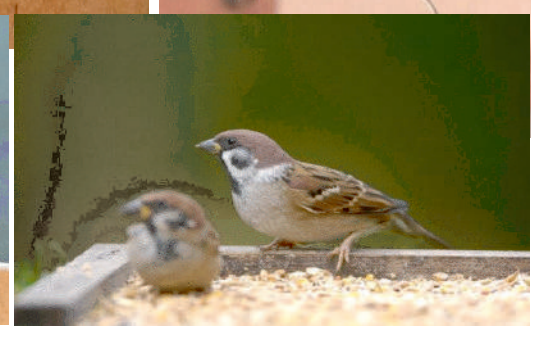

पक्षियों को उनकी ज़रूरतों का ध्यान दें। इस सरल कदम से हम सभी मिलकर प्रकृति की रक्षा कर सकते हैं और अपने आस-पास के परिसर को स्वस्थ और समृद्ध बना सकते हैं।

यदि आप पक्षियों की भलाई के लिए कुछ कर रहे हैं, तो कृपया अपनी कहानी तस्वीरों के साथ Indiangreenbuddy@gmail.com पर साझा करें।

किसी पर टिप्पणी करने से पहले दादूवाल को अपने गिरेबान में झांकने की जरूरत: सरना

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। शिरोमणि अकाली दल दिल्ली इकाई के अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना ने बलजीत सिंह दादूवाल द्वारा की गई टिप्पणियों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है और कहा है कि दादूवाल को किसी के बारे में बोलने से पहले अपने गिरेबान में झांकने की जरूरत है।

यहां जारी एक बयान में सरदार सरना ने कहा कि दादूवाल की किसी भी बात का जवाब देना अपने स्तर से नीचे जाना है मगर गुरुद्वारा बंगला साहिब में गुरु साहिब व संगत के समक्ष जो बातें उन्होंने कही हैं, उनका जवाब देना आवश्यक है। दादूवाल को बताना चाहिए कि जब वे पहली बार हरियाणा कमेटी के सदस्य बने तो किस पार्टी के नेताओं की चापलुसियां करके बने थे। क्या स. प्रताप सिंह बाजवा ने उनके नाम की सिफारिश नहीं की थी? प्रताप सिंह बाजवा किस पार्टी से संबंधित हैं यह सभी जानते हैं।

सरना ने बताया कि उनकी स्वयं की सिफारिश पर दादूवाल सदस्य बने थे। यदि वह यह भी भूल गए हैं तो शहर और जगह भी बता सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जिस पार्टी ने बंदी सिंह को रिहा करने का वादा किया था, किसानों के मुद्दों का समाधान करने की बात कही थी, वह पार्टी सिखों के हर मुद्दे में हस्तक्षेप करना चाहती है और निरंतर कर रही है। ऐसी पार्टी में बिना शर्त शामिल होने या समर्थन करने वालों की आलोचना क्यों नहीं होनी चाहिए और दादूवाल आज उसी पार्टी के समर्थक प्रवक्ता बनकर बैठे हैं।

उन्होंने कहा कि दादूवाल को शर्म आनी चाहिए कि आठवें गुरु श्री हरिकृष्ण साहिब जी के पवित्र स्थल गुरुद्वरा बंगला साहिब में बैठ कर सिखों के मसलों को हल करने की बजाय किसी पार्टी के चाटुकार समर्थक बनकर तुच्छ बातें कर रहे हैं। वह भी उस पार्टी की जो सिखों के संस्थानों पर कब्ज़ा करना चाहती है लेकिन संगत उनकी हरकतों से भलिभांति परिचित है इसलिए किसी भी बहकावे में आने वाली नहीं।

अवैध शराब तस्करी पर अंकुश

परिवहन विशेष न्यूज

फ़रीदाबाद। जिला मजिस्ट्रेट विक्रम सिंह ने लोकसभा आम चुनाव 2024 के दौरान अवैध शराब तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों को सूक्ष्म स्तर पर खुफिया जानकारी जुटाने और सीआईडी इनपुट के आधार पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने रविवार को पुलिस कमिश्नर राकेश कुमार आर्य समेत सभी अधिकारियों के साथ लोकसभा चुनाव में अवैध शराब तस्करी और जीएसटी चोरी के सभी पहलुओं पर व्यापक समीक्षा बैठक की।

जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान शराब तस्करी से जुड़े मामलों में विभाग मिलकर और अधिक गहनता से काम करें. जिले में अवैध शराब की सप्लाई करने वालों के खिलाफ प्रशासन ने कार्रवाई तेज कर दी है. आदर्श आचार संहिता के दौरान शराब की अवैध आपूर्ति नहीं होनी चाहिए. अवैध शराब ठेकों की भी नियमित जांच की जाए। जिले में जीएसटी चोरी न हो और अवैध शराब न मिले। यदि कहीं भी अवैध शराब पाई जाए तो संबंधित लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

फ़रीदाबाद की हरित पट्टी को पुनर्जीवित करना: स्थिरता की दिशा में एक सामुदायिक प्रयास : अंकुर

फ़रीदाबाद नगर निगम (एमसीएफ) के नेतृत्व में एक सराहनीय पहल में, बंगाल शूटिंग चौक के पास इंद्रप्रस्थ कॉलोनी और स्प्रिंगफील्ड कॉलोनी, MCF वार्ड समिति के सदस्यों और रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) के अटूट समर्थन के साथ, ग्रीन बेल्ट विकसित करने और एक परिवर्तनकारी परियोजना को बढ़ावा देने के लिए हरे-भरे आवरण ने जड़ें जमा ली हैं।

ग्रीन बेल्ट के लिए नामित क्षेत्र अप्रत्याशित चुनौतियों के कारण लंबे समय से सुस्त पड़ा हुआ था। हालाँकि, लगातार प्रयासों और परिश्रमी अनुवर्ती कार्रवाई के माध्यम से, एक उल्लेखनीय परिवर्तन सामने आया है। हाल ही में पृथ्वी दिवस समारोह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ क्योंकि पूरे ग्रीन बेल्ट को उचित रूप से बैरिकेड किया गया था और देशी पेड़ों से सजाया गया था, जिससे परिदृश्य में नई जान आ गई।

एमसीएफ, वार्ड समिति के सदस्यों और आरडब्ल्यूए के बीच सहयोगात्मक भावना इस महत्वाकांक्षी दृष्टि को साकार करने में सहायक रही है। उनके ठोस प्रयासों ने न केवल आसपास के वातावरण को सुंदर बनाया है बल्कि फ़रीदाबाद की पारिस्थितिक स्थिरता में भी योगदान दिया है।

इसके अलावा, इस पहल ने आसपास के क्षेत्रों और बाजार के सदस्यों से हरियाली के पोषण में हाथ मिलाने की अपील के साथ, तत्काल समुदाय से परे अपनी पहुंच बढ़ा दी है। यह सामूहिक प्रयास पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है और सकारात्मक परिवर्तन को प्रभावित करने में समुदाय-संचालित पहल की शक्ति को रेखांकित करता है।

इस प्रयास की निरंतर सफलता सुनिश्चित करने के लिए, रखरखाव की एक मजबूत प्रणाली लागू की गई है। 3-4 बार पानी के टैंकरों की मदद से नियमित रूप से पानी देने से भीषण गर्मी के बीच भी नए लगाए गए पेड़ों की स्वस्थ वृद्धि सुनिश्चित हुई है। निवासियों के बीच देखी गई संतुष्टि की स्पष्ट भावना इस पहल के परिवर्तनकारी प्रभाव का प्रमाण है।

आगे देखते हुए, पारदर्शिता और जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता सर्वोपरि बनी हुई है। एक पाक्षिक रिपोर्ट और समीक्षा तंत्र लागू किया जाएगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रगति की बारीकी से निगरानी की जाएगी और सक्षम अधिकारियों के साथ साझा किया जाएगा। चल रहे मूल्यांकन के प्रति यह प्रतिबद्धता उत्कृष्टता और निरंतर सुधार के प्रति समर्पण को दर्शाती है।

फ़रीदाबाद के ग्रीन बेल्ट का पुनरुद्धार इस बात का एक चमकदार उदाहरण है कि सहयोगात्मक कार्रवाई और अटूट दृढ़ संकल्प के माध्यम से क्या हासिल किया जा सकता है। जैसे-जैसे हरियाली बढ़ती है और समुदाय फलता-फूलता है, यह पहल फरीदाबाद और उसके बाहर भी इसी तरह के प्रयासों के लिए एक प्रेरणा के रूप में काम कर सकती है, जो एक हरित, अधिक टिकाऊ भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।

indiangreenbuddy@gmail.com

सुबह से ही तेज धूप में गर्मी की मार से लोग हो रहे परेशान, अगले दो दिनों तक भी नहीं मिलेगी राहत

गाजियाबाद में बीते कई दिनों से बढ़ती गर्मी की वजह से लोगों का बुरा हाल है। सोमवार सुबह से ही धूप के आगे आसमान में मंडराते हल्के बादल बेअसर रहे। इसी बीच लोग गर्मी से परेशान और इससे बचते हुए देखे गए। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले दो दिनों में तापमान बढ़ने के साथ गर्मी ज्यादा महसूस होगी।

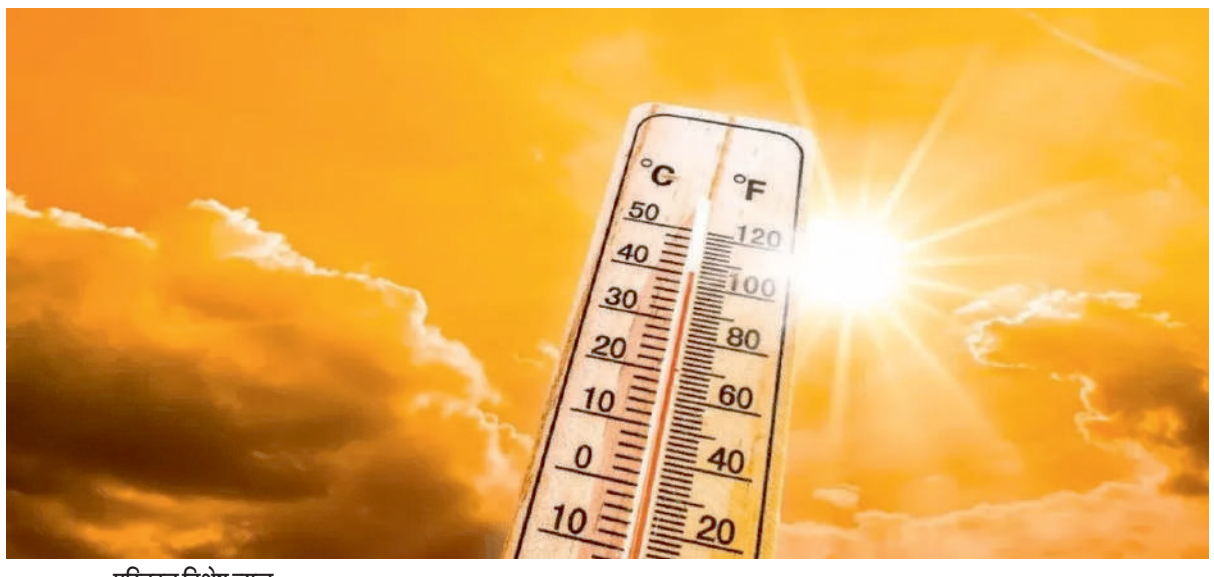

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। बीते कई दिन से लगातार गर्मी में लोगों का बुरा हाल है। सोमवार को सुबह सवेरे से ही धूप के आगे आसमान में मंडराते हल्के बादल बेअसर रहे। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले दो दिन तापमान बढ़ने के साथ गर्मी ज्यादा महसूस होगी।

बीते कई दिन से लगातार लोग गर्मी से परेशान हैं। सुबह से ही धूप में रुकना मुश्किल हो जाता है। शनिवार को पूरे दिन गर्मी रहने के बाद रात में ठंडी हवा बहती रही थी। लेकिन रविवार के बाद सोमवार को सुबह सवेरे से ही फिर से गर्मी ने अपना रंग दिखा दिया। दोपहर में लोग लू और गर्मी की वजह से कम ही घर से बाहर दिखे। जो लोग घर से बाहर निकले और धूप व गर्मी से अपना बचाव करते दिखे।

दो दिन गर्मी ज्यादा होगी महसूस

न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गर्म हवा अधिकतम 16 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चली। वातावरण में आर्द्रता 20 प्रतिशत दर्ज की गई। मौसम विभाग का अनुमान है कि मंगलवार को भी तेज धूप व गर्म हवा का सामना करना पड़ेगा। दो दिन गर्मी ज्यादा महसूस हो सकती है।

आर्द्रता 19 प्रतिशत रहने का अनुमान

तापमान में एक दो डिग्री सेल्सियस गिरावट होने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। गर्म हवा की रफ्तार बढ़ने के साथ अधिकतम 18 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलेगी। वातावरण में आर्द्रता 19 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

नोएडा के सेक्टर-18 से 60 के बीच खुली एलिवेटेड रोड, लोगों को राहत; रोजाना गुजरते हैं तीन लाख से ज्यादा वाहन

परिवहन विशेष न्यूज

करीब 20 दिन से बंद सेक्टर-18 से 60 के बीच एलिवेटेड रोड रविवार शाम को वाहन चालकों के लिए खुल गई। इससे वाहन चालकों को बड़ी राहत मिली है। इस रोड से रोजाना करीब तीन लाख वाहन गुजरते हैं। वहीं दूसरी ओर तीसरे चरण का मरम्मत कार्य शुरू करने के लिए सेक्टर-60 से 18 के बीच जाने वाले मार्ग को देर रात बंद कर दिया गया।

नोएडा। मरम्मत कार्य के कारण बंद करीब 20 दिन से बंद सेक्टर-18 से 60 के बीच एलिवेटेड रोड पर आज से वाहन चालक फर्राटा भर सकेंगे। एलिवेटेड रोड को रविवार को शाम को खोल दिया गया था, लेकिन ट्रैफिक का दबाव कम होने के साथ जानकारी नहीं होने से चालक नीचे से गुजरे।

वहीं रविवार शाम से सेक्टर-60 से 18 के बीच तीसरे चरण का मरम्मत कार्य शुरू करने के लिए कारण एलिवेटेड रोड को देर रात बंद कर दिया। एलिवेटेड रोड से होकर रोज करीब तीन लाख से अधिक वाहन गुजरते हैं।

यहां हो सकती है परेशानी

इस वजह से पहले दबाव झेल रही एलिवेटेड रोड के नीचे वाली सड़क और सेक्टर-52, होशियारपुर होकर सेक्टर-37 की ओर जाने वाली सड़क पर ट्रैफिक की स्थिति बिगड़ सकती है।

ऐसे में सेक्टर-62/माडल टाउन, एनएच-24, सेक्टर-71, किसान चौक, पर्थला से होते हुए फेज-3 कोतवाली से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-60 अंडरपास के ऊपर से लेफ्ट टर्न कर, एमपी-3 मार्ग यानी की होशियारपुर, सिटी सेन्टर, सेक्टर-37/बोटनिकल गार्डन से अपने गंतव्य की ओर जा सकेंगे।

असुविधा से बचने के लिए वैकल्पिक मार्ग का प्रयोग करें। यातायात असुविधा उत्पन्न होने पर यातायात हेल्पलाइन नंबर-9971009001 पर संपर्क कर सकते है। यातायात डायवर्जन के दौरान इमरजेंसी वाहनों को सकुशल पास कराया जाएगा।

शोभा यात्रा के कारण बदला रहा यातायात

शोभा यात्रा रविवार को काशीराम पार्क, आम्रपाली रोड से बोटनिकल गार्डन, सेक्टर 18, अट्टा पीर चौक, रजनीगंधा चौक, हरौला, बांस बल्ली मार्केट, शिवानी फर्नीचर चौक, मेट्रो अस्पताल, सेक्टर 12, 22 चौक, एडोब चौक, समरविला तिराहा, सेक्टर-54 चौकी तिराहा, गिझौड चौक, राम मन्दिर सेक्टर-34 तक के बीत निकाली गई। व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी प्रमुख चौराहों पर ट्रैफिक पुलिस तैनात रही।

जिस जगह से यात्रा निकली उस दौरान थोड़ी देर के लिए ट्रैफिक रोकना पड़ा। हालांकि रविवार का दिन होने के कारण सड़कों पर भीड़ कम रही। डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव मौके पर तैनात यातायात कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते रहे।

कॉन्वेंट नहीं, साक्षा संस्कृति की एक समान शिक्षा के हैं सभी पक्षधर: निशंक

डॉ. रमेश ठाकुर

ये जनता की मांग है। कान्वेंट स्कूलों की शिक्षा और संस्कृति में बदलाव हो, वहां एक समान शिक्षा की लौ जले, ऐसी डिमांग आज से नहीं, बल्कि वर्षों से लोग उठा रहे हैं। मैं समझता हूं, इसके पक्षधर सभी को होना चाहिए। साफ करना जरूरी है कि हम किसी शिक्षा, जुबान और मजहब के खिलाफ नहीं हैं?

कैथोलिक स्कूलों में भी शिक्षा का स्वरूप अन्य स्कूलों जैसा ही हो। एक धर्म समुदाय को ध्यान में रखकर सिर्फ कॉन्वेंट संस्कृति का न हो प्रचार-प्रसार? हालांकि ये ऐसा मुद्दा है जो आज से नहीं, बल्कि कई वर्षों से चर्चाओं में है। पर, देर आए, दुरूस्त आए, आखिरकार केंद्र सरकार ने नई गाइडलाइन जारी करके सभी कैथोलिक स्कूल को निर्देश दे ही दिया है कि वह जारी नियमों को आगामी शैक्षणिक सेशन से अपनाना शुरू करें। क्या हैं नए नियम, और किसको है दिक्कतें? ऐसे तमाम उभतरे सवालों को लेकर पत्रकार डॉ. रमेश ठाकुर ने पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' से बातचीत कर मसले को समझा।

प्रश्नः कॉन्वेंट स्कूलों की शिक्षा में बदलाव की जरूरत क्यों महसूस हुई?

उत्तरः ये जनता की मांग है। कान्वेंट स्कूलों की शिक्षा और संस्कृति में बदलाव हो, वहां एक समान शिक्षा की लौ जले, ऐसी डिमांग आज से नहीं, बल्कि वर्षों से लोग उठा रहे हैं। मैं समझता हूं, इसके पक्षधर सभी को होना चाहिए। साफ करना जरूरी है कि हम किसी शिक्षा, जुबान और मजहब के खिलाफ नहीं हैं? भारत साक्षा संस्कृति से हरा-भरा निर्मित देश है। लेकिन सिर्फ एक शिक्षा और अलहदा संस्कृति से अगर कोई बांधने की कोशिश करेगा, तो मोदी युग में तो मुमकिन होगा नहीं? हमारा नारा है, 'सबका साथ, सबका विश्वास' उसी रास्ते पर चल रहे हैं। हमारी सरकार में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता, एक समान दृष्टि से देखा जाता है सभी को। शिक्षा ही सोच में बदलाव लाती है, पर शिक्षा जाति-समुदायों में बंधी नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नः सरकार के हिसाब से ईसाई स्कूलों में क्या-क्या होना चाहिए?

उत्तरः क्या होना चाहिए, इसके लिए प्रयुक्त गाइडलाइंस सभी को दे दी गई हैं। सबसे पहले तो छात्र-छात्रों और स्टाफ सदस्यों को निर्देशित

किया गया है कि धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनशीलता और विविधता का एक समान प्रसार किया जाए। इसके अलावा सबसे जरूरी ये है कि प्रत्येक कॉन्वेंट स्कूलों में प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों, वैज्ञानिकों, कवियों व राष्ट्रीय नेताओं की तस्वीरें उनकी लाइब्रेरी और लॉबी आदि जगहों पर लगाई जाएं। किसी सिंगल व्यक्ति विशेष की फोटो स्कूलों में न टांगी जाए। प्रेरक और प्रेरणादायक व्यक्तियों की ही फोटो स्कूलों में लगाई जाए। ऐसा करने से छात्र पूर्व के कालखंड़ों से भी वंचित नहीं होंगे। इतिहास में किन-किन लोगों ने क्या-क्या किया और उनका बलिदान किन क्षेत्रों में रहा, इसकी जानकारियां छात्रों को अन्य स्कूलों की भांति मुहैया हो सकेगी।

प्रश्नः क्या केंद्र की इस गाइडलाइंस से 'कैथोलिक बिशप सम्मेलन' संस्था खुश होगी?

उत्तरः इसमें खुशी और न-खुशी का सवाल ही नहीं? सरकार की नीतियों को अपनाना सबका धर्म बनता है। बेहतरीन गाइडलाइंस हैं, सभी के भले और हित के लिए हैं। इसमें किसी का अहित नहीं। धर्म के लिहाज से आप किसी छात्र पर जबरदस्ती ईसाई परंपरा या अन्य संस्कृति नहीं थोप सकते। मदरसों में भी तो गीता का पाठ पढ़ाना और संस्कृति की शिक्षा देनी आरंभ हो गई है। वहां तो कोई विरोध नहीं कर रहा। देश में जब 'एक विधान, सबके समान' की बात कही जा रही है, तो कॉन्वेंट स्कूलों में सिर्फ ईसाई शिक्षा क्यों? ये संभव नहीं?

प्रश्नः नए निर्देश में आस्थाओं और परंपराओं का सम्मान करने की बात कही गई है?

उत्तरः मुख्य उद्देश्य यही तो है कि कॉन्वेंट संस्कृति में सिर्फ अंग्रेजी और ईसाइयत का प्रचार-प्रसार न हो? सरकार ये नहीं कहती है कि ईसाई धर्म को न माना जाए, लेकिन उसके साथ-साथ साक्षा संस्कृति की आस्थाओं और परंपराओं की अवहेलना भी न हों, उन्हें भी सम्मान दिया जाए। केंद्र सरकार की ये नई पहल दरअसल वर्तमान समय में सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थितियों के मध्य उभरती नई किस्म की चुनौतियों' से निपटना मात्र है। हमें इसका दिल खोलकर स्वागत करना चाहिए।

प्रश्नः कब से लागू होगी ये योजना?

उत्तरः आगामी सेशन से शुरू होगी। ये गाइडलाइंस सिर्फ ईसाई स्कूलों के लिए ही नहीं है, बल्कि तमाम शैक्षणिक संस्थाओं के लिए भी है। स्थानीय एंव जाति-समुदायों की आड़ में दी जाने वाली शिक्षा और कैथोलिक बिशप्स कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया से जुड़े करीब 14 हजार स्कूल, 650 कॉलेज, 7 यूनिवर्सिटी, पांच मेडिकल कॉलेज और 450 तकनीकी-व्यावसायिक संस्थाओं के अलावा जितने भी ऐसे शैक्षणिक हब हैं जो अलग रास्ते पर लगते थे, उन सभी में ये नई गाइडलाइन तत्काल प्रभावे से लागू होगी। हालांकि कहीं से अभी तक विरोध के सुर उठे नहीं हैं।

प्रश्नः गाइडलाइन के बाद सीबीसीआई का एक बयान जिसमें बदलती सियासी परिस्थितियों में सतर्क और संवेदनशील रहना बताया था?

उत्तरः चुनावी मौसम में विपक्ष इस मुद्दे को हवा देने की कोशिश में है। जबकि, ये मसौदा सभी के साथ रायशुमारी करके शिक्षा मंत्रालय ने तैयार करके ये ऐतिहासिक निर्णय लिया। मुझे लगता है किसी को विरोध करना नहीं चाहिए। मोदी जी का हमेशा से प्रयास रहा है कि देश के सभी बच्चों को एक जैसी शिक्षा मिले। शिक्षा का बंटना समाज के लिए अच्छा नहीं होता।

-बातचीत में जैसा पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने डॉ. रमेश ठाकुर से कहा

महिंद्रा ने लॉन्च की 7.49 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर दमदार गाड़ी, जानिए इंजन ऑप्शन और सेफ्टी फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

XUV 3XO कंपनी की XUV300 से डिजाइन के मामले पूरी तरह बदल गई है। इसमें एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट्स को पूरी तरह से बदल दिया गया है। इसमें mStallion G12 TGDi टर्बोचार्ज्ड MPFI इंजन मिलता है जो 130ps की पावर और 230एनएम का टॉर्क पैदा करता है। इसकी कीमत 7 .49 लाख रुपये से शुरू है। आइए इसकी कीमत और फीचर्स के बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने भारत में अपनी Mahindra XUV 3XO को कई दमदार फीचर्स के साथ लॉन्च कर दिया है। एसयूवी में बिल्कुल नया इंटीरियर सिस्टम दिया गया है। आइए इसके फीचर्स और कीमत के बारे में जान लेते हैं।

डिजाइन और इंटीरियर

XUV 3XO कंपनी की XUV300 से डिजाइन के मामले पूरी तरह से बदल गई है। इसमें एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट्स को पूरी तरह से नया रूप दिया गया है, और नए आकार की एलईडी डे टाइम रनिंग लाइट्स द्वारा आउटलाइन्ड किया गया है। वहीं, बैक प्रोफाइल की बात करें तो XUV 3XO में C-आकार की LED टेल-लाइट्स हैं जो जुड़ी हुई हैं एक फुल-चौड़ाई वाली एलईडी लाइट बार है। इसमें 10.25-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम है और इसके साइड में 10.25-इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट डिस्प्ले दिया गया है। खास बात है कि इसमें बूट स्पेस 257 लीटर से बढ़कर 295 लीटर हो गया है।

मिलते हैं खास फीचर्स

महिंद्रा ने इस गाड़ी में पैनोरोमिक, सात स्पीकर के साथ Harman Kardon साउंड सिस्टम, डुअल जोन क्लाइमेट कंट्रोल दिया गया है, जिसे AdrenoX से एक्सेस किया जा सकता है। सेफ्टी के लिहाज से देखें तो इसमें ESP, ट्रैक्शन कंट्रोल, ISOFIX और एडास की सुविधा दी गई है।

इंजन ऑप्शन

इसमें mStallion G12 TGDi टर्बोचार्ज्ड MPFI इंजन मिलता है, जो 130ps की पावर और 230nm का टॉर्क पैदा करता है। दूसरा इंजन D15 VGT इंजन है, जो 117 पीएस की पावर और 300 एनएम का टॉर्क निकालने में सक्षम है। जबकि, ट्रांसमिशन के तौर पर 6 स्पीड AISiN ऑटोमैटिक और 6 स्पीड ऑटोशिफ्ट प्लस ऑप्शन मिलता है। गाड़ी 1.5 L Turbo डीजल ऑप्शन में भी आती है।

Mahindra XUV 3XO की कीमत

महिंद्रा ने अपनी सबसे नई एसयूवी XUV 3XO को 7.49 लाख रुपये की शुरूआती एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया है। वहीं, Skyroof के साथ एसयूवी की एक्स शोरूम कीमत 8.99 लाख रुपये है।

फोर्स ने फाइव डोर गुरखा को किया पेश, जानें कितना दमदार है इंजन, फीचर्स

फोर्स मोटर्स की ओर से 5 सीटों वाली गुरखा से पर्दा हटा दिया गया है। कंपनी की ओर से एसयूवी में किस तरह के बदलावों को किया गया है। इसमें कितना दमदार इंजन दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। इसके साथ ही इसे कब तक लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की एसयूवी निर्माता फोर्स मोटर्स ने पांच दरवाजों वाली गुरखा को पेश कर दिया है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि कंपनी की ओर से इस एसयूवी में किस तरह के बदलाव किए गए हैं। इसमें कितना दमदार इंजन, फीचर्स दिए जा रहे हैं।

Force Gurkha 5 Door हुई पेश

फोर्स की ओर से भारत में अपनी बेहतरीन एसयूवी गुरखा के पांच दरवाजों वाले वर्जन को पेश कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी में ज्यादा लंबा व्हीलबेस दिया है। इस नई एसयूवी की कीमतों की घोषणा भी कंपनी की ओर से जल्द की जाएगी।

कितनी लंबी-चौड़ी

फोर्स की फाइव डोर गुरखा का व्हीलबेस 425 एमएम तक बढ़ाया गया है। तीन दरवाजों वाली गुरखा का व्हीलबेस 2400 एमएम है, जबकि पांच दरवाजों वाली गुरखा का व्हीलबेस 2825 एमएम है। रूफ कैरियर के साथ यह 2296 एमएम ऊंची है, जबकि बिना रूफ कैरियर के इसकी ऊंचाई 2095 एमएम है। इसका टर्निंग रेडियस भी 6.3 मीटर हो गया है। पांच दरवाजों वाली इस एसयूवी में अब सात यात्री एक साथ सफर कर सकते हैं। इसकी ग्राउंड क्लियरेंस 233 एमएम की है।

कैसे हैं फीचर्स

कंपनी की ओर से इसमें आइकोनिक एलईडी हैडलैंप दिए हैं। इसके अलावा इसमें 18 इंच के ड्यूल टोन अलॉय व्हील्स, लैडर रूफ एक्सेस, नई अपहोल्स्ट्री, सेकेंड रो बेंच सीट, थर्ड रो कैप्टन सीट, नौ इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, मैनुअल एसी, रूफ एसी वेंट, पावर विंडो, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, ड्यूल एयरबैग, रिवर्स कैमरा, एबीएस, टीपीएमएस जैसे कई फीचर्स मिलते हैं। एसयूवी को हरे, लाल, सफेद और काले रंगों के विकल्प में खरीदा जा सकता है।

कितना दमदार इंजन

एसयूवी में कंपनी 2.6 लीटर का चार सिलेंडर वाला डीजल इंजन देती है। इस इंजन से एसयूवी को 140 हॉर्स पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इस एसयूवी में स्टार्ट/स्टॉप जैसे फीचर को भी दिया गया है, जिससे इसका एवरेज बेहतर हो जाता है। इसमें पांच स्पीड का मैनुअल ट्रांसमिशन दिया गया है। जिसके साथ ही इसमें 4x4 को भी दिया जा रहा है।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से अभी इस एसयूवी को सिर्फ पेश किया गया है। कुछ समय बाद इसे आधिकारिक तौर पर भारतीय बाजार में लॉन्च किया जाएगा। तभी इस एसयूवी की कीमत की जानकारी भी कंपनी की ओर से दी जाएगी। फिलहाल पांच दरवाजों वाली गुरखा का सीधा मुकाबला मारुति जिम्नी से होगा।

Toyota कर रही कई तरह की तकनीक वाली गाड़ियों पर काम, दैनिक जागरण से खास बातचीत में और क या बोले GM

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई कंपनियों की ओर से अपनी कारों, MPV, SUV को ऑफर किया जाता है। इनमें जापानी वाहन निर्माता Toyota भी शामिल है। टोयोटा किर्लोस्कर के GM वाइसलाइन सिगामणि ने दैनिक जागरण से बातचीत में किस तरह की खास जानकारी को साझा किया है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

नॉर्थ इंडिया में हासिल की बेहतरीन ग्रोथ

Toyota ने खास तौर पर उत्तर भारत में एसयूवी सेगमेंट की बिक्री के मामले में काफी बेहतरीन ग्रोथ हासिल की है। कंपनी के जीएम वाइसलाइन सिगामणि के मुताबिक इस वित्तीय वर्ष में टोयोटा किर्लोस्कर ने 48 फीसदी की ग्रोथ हासिल की है। एसयूवी सेगमेंट में कंपनी के पास 5.5 फीसदी शेयर है, जबकि इसके पहले वित्त वर्ष में यह 4.4 फीसदी था। कंपनी की कुल एसयूवी सेल में Hilux का नॉर्थ इंडिया में योगदान 56 फीसदी रहा है।

ग्राहकों की पसंद में हुआ बदलाव

टोयोटा किर्लोस्कर के जीएम के मुताबिक पिछले कुछ सालों में ग्राहकों की पसंद में काफी बदलाव आया है। कुछ साल पहले तक ग्राहकों को सिर्फ ज्यादा जगह वाली एसयूवी ही पसंद थीं। लेकिन करीब एक से दो साल में इसमें बदलाव देखने को मिला और अब ग्राहकों को ज्यादा फीचर्स, आराम और जगह के साथ ही ऑफ रोडिंग की क्षमता वाली एसयूवी भी काफी पसंद आ रही हैं।

टोयोटा Hilux को पसंद कर रहे ग्राहक

Toyota की ओर से लाइफस्टाइल सेगमेंट में Hilux को ऑफर किया जाता है। इसमें कंपनी पैसेंजर कार के फीचर्स, लग्जरी और आराम के साथ ही ऑफ रोडिंग क्षमता और सामान लाने और ले जाने की भी सुविधा देती है। जिससे यह रोजाना के कामों के साथ ही परिवार के साथ छुट्टियों पर जाने वाली बेहतरीन गाड़ी के तौर पर एक पसंदीदा गाड़ी बन जाती है।

110 सीसी के इन दोनों स्कूटर में से कौन है बेहतर, जानें डिटेल

भारतीय बाजार में 110 सीसी सेगमेंट में कई स्कूटर को ऑफर किया जाता है। लेकिन इनमें से Honda Activa और TVS Jupiter जैसे स्कूटर को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। टीवीएस और होंडा की ओर से आने वाले इन दोनों स्कूटर्स में किस तरह के फीचर्स को दिया जाता है। इनमें कितनी क्षमता का इंजन मिलता है और इनकी कीमत क या है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में 110 सीसी सेगमेंट की कई बेहतरीन स्कूटर्स को ऑफर किया जाता है। इनमें Honda Activa और TVS Jupiter जैसे स्कूटर शामिल हैं। हम इस खबर में आपको इन दोनों स्कूटर में किस तरह के फीचर्स को दिया जाता है। कितना दमदार इंजन मिलता है और इनको किस कीमत पर खरीदा जा सकता है, इसकी जानकारी दे रहे हैं।

कितना दमदार इंजन

दोपहिया वाहन निर्माता होंडा अपने Activa को 110 सीसी में भी ऑफर करती है। यह स्कूटर देश में सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला स्कूटर है। इसमें कंपनी की ओर से 109.51 सीसी का फोर स्ट्रोक एसआई इंजन दिया जाता है। जिससे स्कूटर को 5.77 किलोवाट की पावर और 8.90 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। वहीं टीवीएस की ओर से भी इस सेगमेंट में Jupiter को ऑफर किया जाता है। टीवीएस के इस स्कूटर में कंपनी की ओर से 109.7 सीसी का फोर स्ट्रोक, सीवीटीआई फ्यूल इंजन तकनीक का इंजन मिलता है। जिससे स्कूटर को 5.8 किलोवाट की पावर और 8.8 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कैसे हैं फीचर्स

होंडा एक्टिवा 110 में कंपनी की ओर से इंजन स्टार्ट/स्टॉप स्विच, डबल लिड एक्सटर्नल फ्यूल फिल, टेलीस्कोपिक सस्पेंशन, साइलेंट स्टार्ट, फ्यूल इंजेक्शन, मल्टी फंक्शन यूनिट, एनॉलॉग स्पीडोमीटर के साथ ही छह रंगों का विकल्प दिया जाता है। वहीं टीवीएस जुपिटर में एलईडी हैडलैंप, इकोनोमीटर, एंटी स्किड सीट, फ्रंट टेलीस्कोपिक सस्पेंशन, एडजस्टेबल गैस चार्ज रियर सस्पेंशन, ऑप्शनल मोबाइल चार्जिंग, फ्रंट यूटिलिटी बॉक्स, पार्किंग ब्रेक जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है कीमत

होंडा एक्टिवा को कंपनी की ओर से दो वेरिएंट में ऑफर किया जाता है। इसकी एक्स शोरुम कीमत 76234 रुपये से शुरू होती है और एच स्मार्ट वेरिएंट की कीमत 82234 रुपये एक्स शोरूम है। वहीं टीवीएस जुपिटर की कीमत की शुरूआत 73340 रुपये से होती है और इसके टॉप वेरिएंट को 89748 रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

वोल्वो की इलेक्ट्रिक SUV पर मिल रहा तगड़ा डिस काउंट, जानें कब तक मिलेगा फायदा

स वीडन की कार निर्माता Volvo भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक और आईसीई वर्जन वाली कारों और एसयूवी की बिक्री करती है। लेकिन कंपनी की एक खास Electric SUV को खरीदना फायदे का सौदा साबित हो सकता है। कंपनी की किस एसयूवी पर लाखों रुपये की बचत की जा सकती है। किस एसयूवी पर कब तक यह ऑफर दिया जा रहा है।

नई दिल्ली। यूरोपिय वाहन निर्माता Volvo की ओर से कुछ बेहतरीन Electric Cars को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। जानकारी के मुताबिक कंपनी अपनी एक इलेक्ट्रिक एसयूवी पर लाखों रुपये का डिस्काउंट ऑफर कर रही है। इस एसयूवी में कंपनी कैसे फीचर्स देती है। इसको फुल चार्ज में कितनी दूरी तक चलाया जा सकता है। इसकी जानकारी हम आपको इस खबर में दे रहे हैं।

किस एसयूवी पर मिलेगा कितना डिस-काउंट

कंपनी की ओर से मिली जानकारी के मुताबिक Volvo C40 रिचार्ज को खरीदने पर ग्राहकों को तगड़ा फायदा मिल सकता है। जानकारी के मुताबिक इस इलेक्ट्रिक एसयूवी पर कंपनी की ओर से दो लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इससे पहले फरवरी महीने में भी कंपनी ने इस गाड़ी पर एक लाख रुपये तक के डिस्काउंट ऑफर दिए थे।

कब तक मिलेगा डिस-काउंट

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक C40 रिचार्ज पर Volvo दो लाख रुपये का डिस्काउंट दे रही है। लेकिन यह ऑफर एसयूवी के 2023 मॉडल्स पर ही दिया जा रहा है। इसके साथ ही कंपनी ने यह जानकारी भी दी है कि इसके 2024 में बने मॉडल्स पर किसी भी तरह का कोई डिस्काउंट नहीं मिल रहा है। MY 2023 की बची हुई यूनिट्स पर ही इस डिस्काउंट ऑफर को दिया जा रहा है।

क्या हैं खूबियां

वोल्वो की ओर से सी-40 रिचार्ज इलेक्ट्रिक एसयूवी को साल 2022 में लॉन्च किया गया था। इसमें कंपनी नौ इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, हरमन कार्डन का आडियो सिस्टम, एपल कार प्ले और वायर्ड एंड्राइड ऑटो, 12.3 इंच का इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हीटेड सीट्स, ड्यूल जोन क्लाइमेट कंट्रोल, पैनोरमिक सनरूफ और ADAS जैसे कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाता है।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

Volvo C40 रिचार्ज में कंपनी की ओर से 78kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जाता है। इस बैटरी को एक बार फुल चार्ज करने के बाद 530 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें ऑल व्हील ड्राइव फीचर को भी दिया जाता है। एसयूवी में ट्विन मोटर भी मिलती है, जिससे 403 बीएचपी और 660 न्यूटन मीटर का टॉर्क भी मिलता है। इस एसयूवी को जीरो से 100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में सिर्फ 4.7 सेकेंड का समय लगता है। इसकी टॉप स्पीड 180 किलोमीटर प्रति घंटा है और इसे 150kWh के चार्जर से सिर्फ 37 मिनट में 10 से 80 फीसदी तक चार्ज किया जा सकता है।

कितनी है कीमत

कंपनी की ओर से इस एसयूवी की एक्स शोरूम कीमत 62.95 लाख रुपये है। लेकिन इसके MY23 मॉडल्स पर दो लाख रुपये की छूट मिल रही है। जिसके बाद इसे 60.95 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

गर्मियों के मौसम में बाइक का किस तरह रखें ध्यान, नहीं होगी कोई समस्या, जानें डिटेल

नई दिल्ली। भारत में गर्मियों की शुरूआत हो चुकी है। कई राज्यों में तापमान काफी ज्यादा हो जाता है, जिससे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे मौसम में बाइक की सही तरह से देखभाल करना काफी जरूरी हो जाता है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि गर्मियों के समय में बाइक की किस तरह से देखभाल की जा सकती है।

समय पर सर्विस है जरूरी

गर्मियों के समय भी बाइक की सर्विस को हमेशा समय पर करवाना चाहिए। ऐसा करने से कई तरह की समस्याओं से बचा जा सकता है। बाइक चलाने पर इंजन का तापमान भी काफी ज्यादा हो जाता है, जिससे इंजन ऑयल आदि को नुकसान पहुंचने का खतरा भी बढ़ जाता है। ऐसे में अगर सर्विस में देरी की जाए तो फिर इंजन ऑयल काफी जल्दी खराब हो जाता है। कुछ स्थितियों में तो गर्मियों में इंजन ऑयल कम भी होने लगता है। जिससे इंजन की उम्र कम हो जाती है।

एयर फिल्टर रखें साफ

बाइक में एयर फिल्टर का काम इंजन तक साफ हवा पहुंचाना होता है। गर्मियों के समय में भी वातावरण में काफी धूल मिट्टी होती है। जो एयर फिल्टर में रह जाती है। जिस कारण फिल्टर चोक हो जाता है और इंजन तक उचित मात्रा में हवा पहुंचने में परेशानी होती है। गर्मियों के समय भी कोशिश करें कि एयर फिल्टर को साफ करें। अगर खुद से साफ करना संभव न हो तो किसी मैकेनिक से साफ करवाया जा सकता है। अगर जरूरत हो तो इसे बदला भी जा सकता है।

टायर का रखें ध्यान

गर्मियों के मौसम में बाइक के टायर का ही सड़क के साथ संपर्क होता है। इसलिए कोशिश करें कि टायर में सही मात्रा में हवा हो। ऐसा न होने पर बाइक में ईंधन की खपत तो बढ़ती ही है साथ ही टायर की उम्र भी कम हो जाती है। कोशिश करें कि बाइक के टायर में गर्मियों में नाइट्रोजन का उपयोग करें। इससे टायर जल्दी गर्म नहीं होते।

धूप में न खड़ी करें बाइक

बाइक को कभी भी धूप में नहीं खड़ा करना चाहिए। ऐसा करने से कई पार्ट को काफी नुकसान पहुंचता है। कोशिश करनी चाहिए कि बाइक को जब भी पार्क करें तो कवर्ड पार्किंग या छांव में पार्क करें।

वैश्विक ऊंचाई पर खिलौना कारोबार

डा. जयंती लाल भंडारी

निःसंदेह इस समय पूरी दुनिया में यह रेखांकित हो रहा है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान से भारत का खिलौना उद्योग वैश्विक ऊंचाई पर है। स्थिति यह है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान ने खिलौना विनिर्माण क्षेत्र में चीन को झटका देते हुए खिलौना निर्माण को भारत के लिए फायदे का सौदा साबित कर दिया है।

अधिकांश भारतीय खिलौने ई-कॉमर्स वेबसाइटों पर उपलब्ध कराए जाने चाहिएं, ताकि घरेलू खिलौनों की बिक्री को और बढ़ाया जा सके। यह भी जरूरी है कि सरकार के द्वारा प्रस्तावित की गई पारंपरिक और यांत्रिक खिलौनों दोनों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शीघ्र शुरू की जाए। देश में सुगठित खिलौना प्रशिक्षण और डिजाइन संस्थान की स्थापना को मूर्तरूप देना होगा

हाल ही में केंद्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक भारत के खिलौना उद्योग ने वित्त वर्ष 2014-15 से वित्त वर्ष 2022-23 के बीच तेजी से प्रगति की है और निर्यात में 239 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई तथा आयात में 52 प्रतिशत तक की गिरावट आई है। निःसंदेह इस समय पूरी दुनिया में यह रेखांकित हो रहा है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान से भारत का खिलौना उद्योग वैश्विक ऊंचाई पर है। स्थिति यह है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान ने खिलौना विनिर्माण क्षेत्र में चीन को झटका देते हुए खिलौना निर्माण को भारत के लिए फायदे का सौदा साबित कर दिया है। गौरतलब है कि चीन से खिलौनों की खरीददारी करने वाले कई खरीददार अब तेजी से भारत की ओर रुख कर रहे हैं। यह कोई छोटी बात नहीं हैं कि दुनिया में कोई एक दशक पहले खिलौनों की भारत से मुश्किल से ही किसी तरह की खरीददारी होती थी। लेकिन मेक इन इंडिया के कारण कई बड़ी-बड़ी खिलौना कंपनियों ने भारत में खास तौर से दिल्ली में अपना आधार तैयार किया है, जो आज अंतरराष्ट्रीय खिलौना कंपनियों को भी आपूर्ति करती है। इस समय हैस्ब्रो, मैटल, स्पिन मास्टर और अर्ली लर्निंग सेंटर जैसे खिलौनों के वैश्विक ब्रांड आपूर्ति के लिए भारत पर अधिक निर्भर हैं। साथ ही खिलौनों के लिए विश्व प्रसिद्ध इटली की दिग्गज कंपनी ड्रीम प्लास्ट, माइक्रोप्लास्ट और इंकास आदि खिलौनों के लिए अपना ध्यान धीरे-धीरे चीन से भारत पर केंद्रित कर रही हैं।

अब वह समय बीत गया है कि जब पांच-छह वर्ष पहले तक भारत खिलौनों के लिए बहुत कुछ दूसरे देशों पर निर्भर था और भारत में 80 फीसदी से अधिक खिलौने चीन से आयात किए जाते थे। साथ ही लगातार विभिन्न सर्वेक्षणों में कहा जा रहा था कि चीन से आयातित दो-तिहाई खिलौने असुरक्षित थे। चीनी खिलौने में सीसा, कैडमियम और बेरियम के असुरक्षित तत्व पाए गए थे। अब भारत से खिलौनों के तेजी से बढ़ते हुए निर्यात और घटते हुए आयात का नया लाभप्रद अध्याय भी रेखांकित हो रहा है। उल्लेखनीय है कि इस समय देश और दुनिया में भारतीय खिलौना उद्योग की बहुत कम समय में हासिल ऐसी सफलता रेखांकित हो रही है, जिसकी कभी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। इस समय चारों ओर भारत के सस्ते और गुणवत्तापूर्ण खिलौना उद्योग का सुकूनदेह परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। साथ ही भारत का खिलौना निर्यात पांच-छह वर्षों में तेजी से बढ़कर 2600 करोड़ रुपए के स्तर पर पहुंच गया है। भारत से अमरीका, ब्रिटेन, यूरोपीय यूनियन, आस्ट्रेलिया, यूएई, दक्षिण अफ्रीका सहित कई देशों को खिलौने निर्यात किए जा रहे हैं। इस समय भारतीय खिलौना उद्योग का कारोबार करीब 1.5 अरब डॉलर का है जो वैश्विक बाजार हिस्सेदारी का 0.5 फीसदी मात्र है, लेकिन जिस तरह भारत में खिलौना उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, उससे खिलौना उद्योग छलांगे लगाकर बढ़ते हुए इसी वर्ष 2024 में 3 अरब डॉलर तक की ऊंचाई पर पहुंचने की संभावनाएं रखता है। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि देश और दुनिया में भारतीय खिलौना बाजार को ऊंचाई मिलने के कई कारण हैं।

इसमें कोई मत नहीं है कि 'मन की बात' के अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार देश के लोगों को स्वदेशी भारतीय खिलौनों को खरीदने, घरेलू डिजाइनिंग को सुदृढ़ बनाने, भारत को खिलौनों के लिए एक वैश्विक विनिर्माण हब बनाने की अपील की। खिलौनों की बिक्री के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) की मंजूरी जरूरी होना, संरक्षणवाद, चीन-प्लस-वन रणनीति और मूल सीमा शुल्क बढ़ाकर 70 प्रतिशत किए जाने से भारत के खिलौना उद्योग में तेजी आई है। बीआईएस मानक चिन्ह वाले खिलौनों के निर्माण के लिए बीआईएस ने घरेलू निर्माताओं को 1200 से अधिक लाइसेंस और विदेशी निर्माताओं को 30 से अधिक लाइसेंस प्रदान किए हैं। सरकार के प्रयासों से भारतीय खिलौना उद्योग के लिए अधिक अनुकूल विनिर्माण परितंत्र बनाने में मदद मिली है। 2014 से 2020 तक 6 वर्षों की अवधि में सरकार के समर्पित प्रयासों से विनिर्माण इकाइयों की संख्या दोगुनी हो गई है, आयातित वस्तुओं पर निर्भरता 33 प्रतिशत से घटकर 12 प्रतिशत हो गई है। वर्तमान में एमएसएमई मंत्रालय 19 खिलौना उत्पादन केंद्रों की मदद कर रहा है, और वस्त्र मंत्रालय 13 खिलौना उत्पादन केंद्रों को खिलौनों का डिजाइनिंग तैयार करने और जरूरी साधन मुहैया कराने में मदद कर रहा है। स्वदेशी खिलौनों को बढ़ावा देने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रचार पहल भी की गई हैं, जिनमें दि इंडियन टॉय फेयर 2021, टॉयकैथॉन आदि शामिल हैं। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने घटिया स्तर के खिलौनों के आयात पर अंकुश लगाने के लिए प्रत्येक आयात खेप का नमूना परीक्षण अनिवार्य कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014-15 के बाद से लगातार वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट तक में सरकार ने खिलौना उद्योग के विकास के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन और समर्थन देने की रणनीतिक पहल की है। सरकार ने खिलौना उद्योग को देश के 24 प्रमुख सेक्टर में स्थान दिया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारतीय खिलौनों को वैश्विक खिलौना बाजार में बड़ी भूमिका निभाने हेतु खिलौना उद्यमियों को प्रेरित किया गया है। निश्चित रूप से मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत सरकार की नीतिगत पहलों के साथ-साथ घरेलू निर्माताओं के प्रयासों से भारतीय खिलौना उद्योग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यद्यपि देश का खिलौना उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी देश के खिलौना सेक्टर को चमकीली ऊंचाई देने के लिए खिलौना क्षेत्र के तहत एक लम्बे समय से चली आ रही कई बाधाओं को हटाया जाना जरूरी है। भारतीय खिलौना उद्योग में विकास को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीतिक कार्ययोजना की जरूरत है। खिलौना उद्योग के विकास से संबंधित विभिन्न एजेंसियों के बीच उपयुक्त तालमेल बनाया जाना जरूरी है। देश में चीन की तरह खिलौने के विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) को आकार देने की जरूरत है। अभी खिलौनों पर जीएसटी की दर में कटौती की जानी चाहिए, जिससे खिलौनों की कीमत में और कमी आएगी। अधिकांश भारतीय खिलौने ई-कॉमर्स वेबसाइटों पर उपलब्ध कराए जाने चाहिएं, ताकि घरेलू खिलौनों की बिक्री को और बढ़ाया जा सके।

यह भी जरूरी है कि सरकार के द्वारा प्रस्तावित की गई पारंपरिक और यांत्रिक खिलौनों दोनों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शीघ्र शुरू की जाए। देश में सुगठित खिलौना प्रशिक्षण और डिजाइन संस्थान की स्थापना को मूर्तरूप देना होगा। इसके अलावा खिलौना उद्योग के लिए बैंकों से ऋण तथा वित्तीय सहायता संबंधी बाधाओं को दूर करना होगा। हम उम्मीद करें कि सरकार देश को खिलौनों का वैश्विक हब बनाने और खिलौनों के वैश्विक बाजार में चीन को और अधिक टक्कर देने की रणनीति की डगर पर आगे बढ़ेगी। हम उम्मीद करें कि घरेलू बाजार के सस्ते और गुणवत्तापूर्ण खिलौनों से देश के बच्चों और खिलौनों पर आधारित खेलों से मनोरंजन करने वाले करोड़ों लोगों के चेहरों पर मुस्कुराहट बढ़ेगी। खिलौनों के अधिक निर्यात से अधिक विदेशी मुद्रा की कमाई की जा सकेगी। साथ ही खिलौना उद्योग में रोजगार के मौके देश के कोने-कोने में और तेजी से बढ़ेंगे।

संपादक की कलम से

सीजन की आफत में

प्रदेश में पर्यटन सीजन की आफत में नागरिक चिंताएं स्वाभाविक हैं। यह इसलिए भी कि अप्रैल से जून महीने तक यह प्रदेश अपने प्रबंधों में गोता खाता है, जबकि साधारण जनता के लिए ट्रैफिक जाम, वाहनों का प्रदूषण और जलापूर्ति के संकट बढ़ जाते हैं। पर्यटकों का हल्ला गुल्ला जब डलहौजी, मकलोडगंज, कसौली, शिमला व मनाली के कानों में सुराख और आंखों को थका देता है, तो अपनी जनता को सुकून कौन देगा। मसला सरकार का नहीं, बल्कि पर्यटन उद्योग से जुड़े व्यवसायियों का भी है। पर्यटन को पार्टनर चाहिए, तो पर्यटक स्थलों को रक्षक चाहिए। होटल इंडस्ट्री, दुकानदार, रेस्तरां-कैफे, टैक्सी आपरेटर तथा गिफ्ट विक्रेता यह तो चाहते हैं कि पर्यटक सीजन उनके अरमानों को बुलंदी तक पहुंचाए, लेकिन बदले में ऐसे स्थलों के प्रति उनकी वफादारी है क्या। पर्यटक किसी होटल के कमरे का बिल नहीं या टैक्सी पर मात्र यात्री है, बल्कि एक सीजन, सारी बस्ती, सारे शहर और सारे परिवेश का हुलिया बिगाड़ देता है। हर शहर में पर्यटन कचरे का जिम्मेदार शहरी निकाय को क्यों माना जाए। क्यों न हर होटल को सीजन के हिसाब से जिम्मेदार माना जाए। यह मसला गंदगी से आवारा पशुओं और पुलिस व्यवस्था तक खर्च मांग रहा है। अगर पर्यटक शहर के पानी को ही गटक जाएं तो इसका असर सामान्य जीवन पर भी तो पड़ेगा। क्या हिमाचल के जो लोग कसौली, डलहौजी, मकलोडगंज-धर्मशाला, कुल्लू-मनाली या धर्मिक स्थलों में रहते हैं, उनके लिए पर्यटक सीजन में सुकून बचता है।

यह आवश्यक वस्तुओं की मांग और आपूर्ति पर भी असर डालता है। अटल टनल बेशक पर्यटन का काम आसान कर रही है, लेकिन इसके दूसरे छोर के आगे जिंदगी इसका प्रमाण मांगती है, क्या वह संभव है। कितना आसान होगा किसी एंबुलेंस को पांच हजार पर्यटक वाहनों के बीच से गुजर कर लाहुल पहुंचना। सीजन में अगर सारे वाहन पर्यटन हो जाएं, तो दिल्ली भागती वोल्वो पर आठ सौ के बजाय पच्चीस सौ दे पाना आम हिमाचली के लिए कठिन है। यही वजह है कि गगल से दिल्ली-चंडीगढ़ तक की उड़ानें पसीना-पसीना कर देती हैं। पांच हजार में दिल्ली पहुंचती उड़ान अगर सीजन में तीस हजार मांगने लगे, तो यह हिमाचल की विडंबना है। विडंबना यह है कि ट्रैफिक को कम करने के लिए धर्मशाला-मकलोडगंज रोप-वे बना, मगर चार सौ रुपए में एक तरफा सफर अंततः आम आदमी की टांगें ही तोड़ेगा। इसलिए पर्यटक सीजन में सैलानियों के लिए प्लानिंग करते वक्त कुछ आधार स्थानीय जनता को भी दें। पर्यटन की परियोजनाओं में आम जनता के लिए सुकून के चार माह जरूर होने चाहिएं। इसलिए पूरी पर्यटक इंडस्ट्री को सोचना होगा कि जिन रास्तों से उसकी कमाई के साधन बढ़ रहे हैं, वहां स्थानीय जनता के प्रति उसका भी योगदान होना चाहिए।

ऐसे में हर पर्यटक शहर की सामुदायिक व नागरिक सुकून की योजनाओं में होटल, ट्रैवल, व्यापारी व ट्रांसपोर्ट संगठनों को भी आर्थिक योगदान करना होगा। स्थानीय जनता के मनोरंजन, सफाई तथा पार्किंग व्यवस्था के लिए नई परियोजनाओं का ऐसा खाका बने जिन्हें पर्यटन उद्योग का पूर्ण सहयोग मिलना चाहिए। हर शहर में व्यापार मंडल, होटल एसोसिएशन, टैक्सी व वोल्वो आपरेटर कम से कम एक-एक पार्किंग स्थल का निर्माण व संचालन करें तो जनता को राहत मिलेगी। पर्यटक सीजन के दौरान टैक्सी, वोल्वो बस, हवाई उड़ान तथा खाद्य वस्तुओं की दरें व कीमतें तय शुदा दाम पर मिलें, इस पर संबंधित पक्षों को ध्यान देना होगा। पर्यटन उद्योग को हिमाचली आर्थिकी का सारथी बनाने से पहले स्थानीय निकायों को इसका पार्टनर बनाना पड़ेगा ताकि सीजन के चंद महीनों की गफलत से बाहर निकलकर साल भर के लिए कार्यक्रमों का विस्तार करते हुए स्थानीय जनता को भी राहत दी जा सके।

ज्ञान

घटते मतदान के सबब

यदि लोकतंत्र को वाकई जिंदा और प्रासंगिक रखना है, तो भरपूर मतदान कीजिए। चुनाव ही लोकतंत्र की जीवन-रेखा हैं। मताधिकार हमारा संवैधानिक, मौलिक अधिकार है, क्योंकि हम एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र हैं। मतदान छुट्टी या सैर-सपाटे का दिन नहीं है, क्योंकि हम पर देश की संसद और सरकार चुनने का गुरुत्तर दायित्व है। इस दायित्व की लगातार अनदेखी की जा रही है। आम चुनाव, 2024 के दूसरे चरण में भी मतदान अपेक्षाकृत घटा है। अर्थात चुनाव के प्रति हम उदासीन या लापरवाह दिखाई दे रहे हैं। पहले दोनों चरणों में 190 लोकसभा सीटों पर मतदान हो चुका है। यानी करीब 35 फीसदी चुनाव सम्पन्न हो चुका है, लेकिन दूसरे चरण की 88 लोकसभा सीटों पर करीब 16 करोड़ पात्र मतदाता थे। उनमें से करीब 4.5 करोड़ मतदाताओं ने वोट नहीं डाले। आखिर क्यों? क्या इसे चुनाव-बहिष्कार माना जाए? दूसरे चरण में मतदान शनिवार शाम 7 बजे तक 66.7 फीसदी गिना गया। यह चुनाव आयोग का लगभग अंतिम आंकड़ा है। 2019 के चुनाव की तुलना में यह 3 फीसदी कम रहा। मध्यप्रदेश में 9 फीसदी, उप्र में 6.9 फीसदी, बिहार में 5 फीसदी, बंगाल में 4 फीसदी और राजस्थान में 3.39 फीसदी मतदान कम हुआ है। दक्षिण, पूर्व और पूर्वोत्तर भारत में भी मतदान घटा है। कुछ महत्वपूर्ण सीटों में से राहुल गांधी की वायनाड पर 6 फीसदी से ज्यादा और प्रख्यात अभिनेत्री हेमामालिनी की मथुरा सीट पर करीब 11 फीसदी मतदान घटा है। टीवी धारावाहिक 'रामायण' में प्रभु राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल के मेरठ में करीब 6 फीसदी, केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर और पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर के तिरुवनंतपुरम में करीब 10 फीसदी मतदान कम हुआ है।

दरअसल 2019 के दूसरे चरण में जिन सीटों पर भाजपा जीती थी, उन पर 3 फीसदी तक मतदान कम हुआ है। जो सीटें कांग्रेस ने जीती थीं, उन पर 5-10 फीसदी मतदान घटा है। हिंदी पट्टी के प्रमुख राज्यों में मतदान औसतन 7 फीसदी तक घटा है। ये राज्य ही भाजपा के दुर्गनुमा चुनावी गढ़ हैं। क्या यह घटा हुआ मतदान भाजपा के खिलाफ एक 'खामोश चुनावी लहर' है? सवाल यह भी है कि फिर यह लहर किस राजनीतिक दल के पक्ष में है? कांग्रेस ने तो 300 सीटों पर भी उम्मीदवार नहीं उतारे हैं और गठबंधन के तौर पर 'इंडिया' छिन्न-भिन्न स्थिति में है। तो फिर जनादेश कैसा होगा और केंद्र सरकार का स्वरूप भी कैसा होगा? चुनाव का जो रुझान दिखाई दे रहा है, उसमें प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के प्रति गंभीर नाराजगी का भाव महसूस नहीं होता। यदि सरकार बदलने के लिए मतदान होना था, तो लबालब भीड़ पोलिंग स्टेशनों के अंदर-बाहर दिखाई देती और मतदान भी 70 फीसदी से ज्यादा होता। कांग्रेस के पास काडर, बूथ कार्यकर्ता और मतदाता को पोलिंग स्टेशन तक पहुंचाने वाले संगठन की कमी देखी जाती रही है, लेकिन मतदाताओं का ऐसा सैलाब भी गायब है, जो 400 पार के जनादेश को सुनिश्चित कर दे। हालांकि प्रधानमंत्री के मंगलसूत्र और मुसलमान वाले अभियान के बाद ध्रुवीकरण महसूस किया गया है। जुमे की नमाज के बाद मुसलमान भी पोलिंग स्टेशनों की ओर गए हैं। क्या वह सारा मतदान भाजपा-विरोधी हुआ है?

गंभीर सवाल यह है कि मतदान एक स्तर के बाद उठ क्यों नहीं रहा है? पूरे देश में गर्मी अभी इतनी भीषण नहीं है कि सुबह और शाम में मतदान न किया जा सके। क्या युवाओं और नए मतदाताओं ने मतदान कम किया? उनकी दिलचस्पी कम दिखाई दी है। ऐसे कई लाख मतदाताओं ने वोट नहीं दिए।

आब-ए-तल्ख की तिजारत अपराध को दावत

राज्य

प्रताप सिंह पटियाल

शराब की तस्करी व अवैध बिक्री मुल्क में अस्थिरता का तनाजुर पैदा कर रही है। लिहाजा समाज में अमन कायम करने के लिए सैकड़ों लोगों की मौत का कारण बन रही जहरीली शराब का अवैध कारोबार नेस्तनाबूद करना होगा'

इतिहास साक्षी रहा है कि मदिरा की तिजारत, खपत व मांग में कभी कमी नहीं आई है। मद्यपान का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। सुरापान का प्रचलन समाज में हर वर्ग के लोगों में व्यापक रहा है। आचार्य चार्वाक जैसे महान दार्शनिक ने सदियों पूर्व अपने श्लोकों में सुरापान का उल्लेख किया था। मदिरा की नशीली तासीर को कई शायर व फनकार अपने अंदाज में बयान करते आए हैं। 'हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है'- अकबर इलाहाबादी के इन अल्फाज को पाकिस्तान के मशहूर गायक 'गुलाम अली' ने अपनी आवाज से बयान करके सुरा प्रेमियों को नसीहत देकर चेताया था। जाहिर है मदिरा का सेवन हो, अवैध तिजारात हो या देर रात तक खुली रहने वाली मधुशालाओं में आब-ए-तल्ख बोतलों में सजी हो, मदिरा हंगामा जरूर मचाती है।

वर्तमान में आब-ए-तल्ख के घोटाले को लेकर देश की राजधानी चर्चा का मरकज बन चुकी है। देश में चुनावों का दौर चल रहा है। आबकारी विभाग व अन्य सुरक्षा एजेंसियों द्वारा अवैध शराब को कब्जे में लेने की खबरें समाचारपत्रों की सुर्खियां बन रही हैं। मद्यपान के प्रति निगाह-ए-नाज के जज्बात रखने वाला मदिरा प्रेमी वर्ग सुरापान को आब-ए-हयात मानता है, चूंकि आब-ए-तल्ख सुरा प्रेमियों को एक काल्पनिक दुनिया के हसीन ख्वाब दिखाती है। मदिरा की तिजारत को हमारी हुकूमतें अर्थतंत्र की मजबूती का जरिया मानती हैं। अल्कोहल पर लगने वाली एक्साइज ड्यूटी से राज्य सरकारों को एक बड़ा राजस्व हासिल होता है। इसलिए सियासी निजाम शराब को नशा नहीं मानता। मगर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बिगाडने वाली शराब किस हद तक अपना दुष्परिणाम दिखाती है, यह छिपा नहीं है। गत ग्यारह अप्रैल 2024 को हरियाणा के महेंद्रगढ़ में एक निजी स्कूल वैन के भीषण हादसे का शिकार होने से आठ मासूम छात्रों की मौत हो गई, क्योंकि स्कूल वैन का चालक शराब के नशे में धुत था। अवैध शराब के जहरनुमां कारोबार ने कई घरों के चश्म-ओ-चिराग बुझाकर लाखों लोगों की शब-ए-महताब को जुल्मत में तब्दील कर दिया है। 22 मार्च 2024 को पंजाब के संगरूर जिले में बीस से ज्यादा लोगों की मौत का कारण जहरनुमां शराब बनी। संगरूर में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग व चुनाव आयोग भी हरकत में आ गए। जहरीली शराब देश में एक मुद्दत से मौत का तांडव मचा रही है। लेकिन नशे के अजाब से उपजे मातम को शांत करने के लिए पीड़ितों के आब-ए-चश्म पर मुआवजे व सियासी आश्वासनों का मरहम लगा कर मसले को रफा दफा किया जाता है। चश्म-ए-पलक की रौशनी छीनकर चश्मों की सौगात बांटने की कोशिश होती है। शराब तस्करी पर प्रशासन व सुरक्षा एजेंसियों की नाकामी को छुपाने के प्रयास किए जाते हैं।

आर्थिक तंगी के कारण कई लोग शराब माफिया के प्रलोभन में आकर सस्ते दामों पर मिलने वाली नकली शराब खरीद लेते हैं। अवैध शराब ही मौत का कारण बनती है। गुरबत में जीवनयापन करने वाले लोग अदालतों में कानूनी लड़ाई लडने में असमर्थ होते हैं। इसी कारण सैकड़ों लोगों को मौत की आगोश में सुलाने वाले नशे के सरगना कानूनी दांवपेंच से बच निकल कर अपनी नशे की सल्तनत को बेखौफ होकर चलाते हैं। देश में नशा उन्मूलन के नाम पर कई विशेष दिवस मनाए जाते हैं। नशा मुक्ति केन्द्रों का संचालन भी हो रहा है। वहीं मयखानों की संख्या में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज हो रही है। शादी समारोहों में होने वाला फसाद व सडक़ों पर कहर मचाती तेज रफ्तार से बढ़ती दुर्घटनाएं, घरेलू हिंसा तथा सामाजिक परिवेश में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों के पीछे ज्यादातर पसमंजर मद्यपान का ही है। त्योहार, पर्व के अवसर पर मदिरा की डिमांड जोर पकड़ लेती है। कई राज्यों के चुनावों में नशे का समूल नाश भी एक अहम मुद्दा बनता है। नशे की गिरफ्त में जा रहे मुल्क के मुस्तकबिल युवा वर्ग पर चिंता व्यक्त की जाती है, मगर मदिरा के इस्तेमाल के बिना इंतखाबी तश्हीर की दर्जा-ए-हरारत अधूरी रहती है। भारत का शराब उद्योग दुनिया में सबसे बड़े उद्योगों में से एक है। देश के कुछ राज्यों में शराबबंदी जरूर हुई है, लेकिन हकीकत में कोई भी राज्य तथा अवाम ईमानदारी से शराब निषेध के पक्ष में नहीं है। इसलिए कई राज्यों में मद्यनिषेध के प्रयास असफल हुए। शराबबंदी का एक लंबा सफर तय करने वाले गुजरात में सुरा प्रेमी सन् 2018 से गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष कई याचिकाएं दर्ज करके शराबबंदी को चुनौती पेश कर रहे हैं। एक देश एक कानून का हवाला देकर शराब निषेध कानून को राज्य से रुखसत करने की मांग हो रही है। सुरा प्रेमियों की दलील है कि शराब पीने को भी 'राइट टु प्राइवेसी' के तहत बुनियादी अधिकार माना जाए। याचिकाओं में यह भी तर्क है कि 'गुजरात निषेध अधिनियम 1949' राज्य में मदिरा की अवैध तिजारत रोकने में अप्रभावी है। बिहार राज्य में भी शराबबंदी को न्यायालय में चुनौती मिल चुकी है, लेकिन भारत में शराब राज्य का अपना विषय है।

संविधान के अनुच्छेद 47 के तहत प्रत्येक राज्य को मादक पेय व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक दवाओं के सेवन पर प्रतिबंध का अधिकार है। राजस्व जुटाने के लिए किसी सूबे को आब-ए-तल्ख की दारुल हुकूमत बनाकर लोगों को नशे की दलदल में उतार देना कितना उचित है, इस मुद्दे पर मंथन होना चाहिए। स्मरण रहे सुरा प्रेमियों की ख्वाहिश के आगे बेबस होकर अमरीका तथा सोवियत संघ जैसे देशों ने शराबबंदी के फैसले रद्द कर दिए थे। बहरहाल कई परिवारों की बर्बादी का अस्बाब बन चुकी जहरीली मदिरा की अवैध तिजारत शराब माफियाओं के लिए फायदेमंद बिजनेस बन चुकी है। शराब की तस्करी व अवैध बिक्री मुल्क में अस्थिरता का तनाजुर पैदा कर रही है। लिहाजा समाज में अमन कायम करने के लिए सैकड़ों लोगों की मौत का कारण बन रही जहरीली शराब का अवैध कारोबार नेस्तनाबूद करना होगा। देश पर हुक्मरानी करने वाली सियासी व्यवस्था को समझना होगा कि इकोनॉमी की सेहत सुधारने वाली मदिरा की बेहताशा तिजारत सभ्य समाज में संगीन वारदातों को दावत दे रही है। युवावेग को बर्बाद करने वाले नशे पर अंकुश लगना चाहिए।

शव संवाद-41

अपने देश में देशद्रोह के सारे लक्षण बुद्धिजीवी के सपनों के कारण ही फैल रहे हैं। वह सपने देखता है कि देश भ्रष्टाचार से मुक्त हो जाएगा। यही सपना जब वह सरकारी महकमों को सुनाता है, तो व्यवस्था डर जाती है। वह सपने के मुताबिक चलते हुए एक नए पुल से गिरते-गिरते बचा। उसे समझाया गया कि पुलों का गिरना, सरकारी इमारतों का धंसना और सरकारी बसों का सडक़ों पर ब्रेकडाउन हो जाना, बताता है कि देश किस शिद्दत से काम कर रहा है। हम नहीं चाहते कि सौल साल बाद भी हम पुरानी इमारतों से ही काम चलाएं। इसीलिए जहां-जहां पुरानी और अंग्रेजों के जमाने की सही हालत इमारतें हैं, वहां भी इनके सामने नई बना देते हैं। अभी हमने संसद भवन के सामने नया इसलिए बना दिया ताकि अंग्रेजों के सपने न आएं। अब सोचिए नए संसद भवन, अयोध्या में राम मंदिर और पुरानी रेल पटरियों पर नई वंदे भारत ट्रेन दौड़ाकर किसके सपने आते हैं।

दरअसल देश ने सभी के सपने बदल दिए। अब तो खरीदकर भी जो राशन खा रहे हैं, वे भी सोचते हैं कि उन्हें मुफ्त का मिल जाए। वर्षों से बिजली का बिल चुका रहे लोगों का प्रिय सपना है कि मुफ्त बिजली के यूनिट बढ़ जाएं। लोग सपने लेते हैं और सरकारें उन्हें मुफ्त में धार्मिक यात्राएं करा देती हैं। अब तो रोजगार भी केवल सपने में मिलता है और देश का सच भी एक सपने की तरह आता है, लेकिन बुद्धिजीवी के सपने नहीं सुधरे। वह अपनी और देश की हकीकत को जोडक़र सपना देखता है, जबकि सारी जनता सपनों के लिए सपने देखती है, बल्कि अब तो सपने भी सरकारी हो गए। मंचीय हो गए। हर भाषण, हर राशन, हर चुनाव, हर व्यवहार में देश खुद एक स्वप्न लोक बनता जा रहा है। हम हर दिन किसी न किसी बहाने इस स्वप्न लोक में पहुंचा दिए जाते हैं, लेकिन दूसरी ओर ढीठ बुद्धिजीवी के सपने हैं कि मानते नहीं। बुद्धिजीवी सपने देखकर बाजार से यह उम्मीद करने लगा है कि वहां महंगाई नहीं होगी। वह सपनों की भाषा में सब्जी, फल और खाद्य वस्तुओं को संबोधित करने लगा है, जबकि वास्तविकता यह है कि उसकी औकात तो एक आध प्याज, नींबू या मूली खाने तक की नहीं है। दरअसल बुद्धिजीवी से देश को बचाना है, तो उसकी नींद हराम करनी होगी। उसके सपनों के खिलाफ यह देश एकजुट है, तभी तो कानून व न्याय प्रणाली उसकी नींद हराम करने पर तुली हैं।

देश लगभग सारी जनता को जहां सुलाने का प्रयत्न हो रहा है, वहां बचे व जागे हुए बुद्धिजीवी से नहीं, बल्कि उसके सपनों से व्यवस्था डर गई है। वह सपना लेता है कि व्यवस्था एक दिन इतनी बदल जाएगी कि लोग न कार्यालयों, न अस्पतालों, न थानों, न जनप्रतिनिधियों, न अदालतों, न लोकतंत्र और न ही लोकतंत्र के संस्थानों से डरेंगे। देश में डराने का माहौल नहीं रहेगा, तो कैसे हमारे शासक बचेंगे। अंततः देश ने व्यवस्था की खातिर बुद्धिजीवी को नींद हराम की सजा दी। वह अब मारा-मारा फिर रहा है। चैन की नींद अब बुद्धिजीवी को मिलेगी नहीं, इसलिए उसके बचे-खुचे सपने भी मर रहे हैं। वह अपने सपनों के शमशानघाट में रहने लगा है। सपनों को भी शिकायत है कि वे बुद्धिजीवी की मौत मारे जा रहे हैं। उस दिन उसने एक बहुत ही हृष्ट पुष्ट व सौंदर्य से भरपूर सपने की लाश को कंधा दिया, तो वह गुस्से में दुत्कारने लगी, 'हम सपने आजादी के बाद से देश में सबसे संपन्न थे, लेकिन तुम बुद्धिजीवियों ने मिलकर माहौल बिगाड़ दिया। हमारी ही बिरादरी के सपनों को किसी गरीब की झोंपड़ी में देखना कितने सुरक्षित हैं।

वहां सपने यानी हमें देखते-देखते पीढियां शमशानघाट पहुंच गईं, लेकिन उन्होंने सपनों को अमर बनाए रखा। देश को सपने चाहिएं और सपनों को झोंपड़ी, गरीबी, चुनाव के भाषण और भाषण देते नेता। तुमने हमें मार डाला, इसलिए हमारी खातिर सरकारें तुम्हें नहीं छोड़ेंगी। तुम बुद्धिजीवी मरोगे, तो देश सपने देख-देख कर कभी पश्चाताप नहीं करेगा। अफसोस है कि मैं बुद्धिजीवी के यथार्थ के लिए मरा।' बुद्धिजीवी हर बार शमशानघाट में मरे हुए सपनों को ही जला रहा है।

भारत में बड़ी संख या में पहुंचेंगे विदेशी पर्यटक, 2024 में टूटेगा कोरोना काल से पहले का रिकॉर्ड

परिवहन विशेष न्यूज

वैसे तो दुनिया भर में कई प्रतिकूल परिस्थितियां चल रही हैं जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध इजरायल-हमास जंग या इजरायल-ईरान तनाव लेकिन फिर भी भारतीय पर्यटन उद्योग को उम्मीद है कि साल 2024 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों का आंकड़ा कोरोना काल से पहले की तुलना में भी और ज्यादा हो जाएगा। उद्योग को आशा है कि इस वर्ष कम से कम इसमें 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज होगी।

नई दिल्ली। विदेशी पर्यटकों का आगमन साल 2020 में दुनियाभर में फैली कोरोना महामारी (Covid Pandemic) ने सभी क्षेत्रों को भारी नुकसान पहुंचाया। सबसे ज्यादा प्रभावित होने वालों में पर्यटन क्षेत्र यानी टूरिज्म सेक्टर (Tourism Sector) भी रहा क्योंकि लोगों की आवाजाही प्रतिबंधित कर दी गई थी। हालांकि तब से लेकर अब तक हालात काफी हद तक बदल चुके हैं और पर्यटकों की आवाजाही अब सामान्य हो चुकी है। ऐसे में भारतीय पर्यटन उद्योग भी उम्मीद लगाए बैठा है कि साल 2024 उनके लिए कोरोना काल से पहले वाला समय वापस लेकर आएगा।

वैसे तो दुनिया भर में कई प्रतिकूल परिस्थितियां चल रही हैं, जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-हमास जंग या इजरायल-ईरान तनाव, लेकिन फिर भी भारतीय पर्यटन उद्योग को उम्मीद है कि साल 2024 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों का आंकड़ा कोरोना काल से पहले की तुलना में भी और ज्यादा हो जाएगा। उद्योग को आशा है कि इस वर्ष कम से कम इसमें 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज होगी।

उद्योग से जुड़े एक्सपर्ट मानते हैं कि मध्य पूर्व में बढ़ते संघर्ष और महामारी के बाद चीन से विदेशी पर्यटकों के मोहभंग होने की वजह से भारत दुनिया भर के यात्रियों के लिए पसंदीदा गंतव्य के रूप में सुर्खियों में आ रहा है।

हालिया पर्यटन डेटा 2023 में विदेशी पर्यटकों के आगमन (एफटीए) में 305.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का संकेत देता है। 2023 में, 9.23 मिलियन यानी 90 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक भारत आए। हालांकि यह संख्या अभी भी 2019 में कोविड महामारी-पूर्व संख्या 10.93 मिलियन से कम है। एक्सपर्ट मानते हैं कि 2024 में विदेशी मेहमानों की संख्या महामारी-पूर्व दिनों की संख्या को पार कर सकती है।

ट्रैवेल कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के एमडी दीपक दिवा का कहना है, ₹पिछले 12 महीनों में इनबाउंड पर्यटन में वृद्धि हुई है, और होटलों के लिए पिछले 12 महीनों में शायद अब तक का सबसे अच्छा वर्ष रहा है। मुझे लगता है कि यह प्रवृत्ति अगले दो से तीन वर्षों तक दो अंकों की वृद्धि के साथ जारी रहेगी।₹

इसके अलावा, 1000 से अधिक विमानों के अधिग्रहण के लिए भारतीय एयरलाइंस के हालिया ऑर्डर विदेशी पर्यटकों के लिए बेहतर पहुंच और कनेक्टिविटी प्रदान करके भारत के पर्यटन क्षेत्र को और बढ़ावा देंगे। पिछले एक साल में एयर इंडिया, इंडिगो और अकासा ने मिलकर बोइंग और एयरबस से 1120 विमानों का ऑर्डर दिया है। साथ ही, पिछले दस वर्षों में भारत में हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी होकर 149 हो गई है, इससे भारत में नए पर्यटन स्थलों को बढ़ावा मिलेगा।

दिवा ने कहा, ₹मेरा मानना है कि जनवरी 2026 से एयरबस और बोइंग से 470 विमान खरीदने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद एयर इंडिया भारत में आने वाले पर्यटन के विकास के स्तंभों में से एक बनने जा रही है।₹

नए और कम मशहूर पर्यटन स्थल विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि वाराणसी में विदेशी पर्यटकों का आगमन कई गुना बढ़ गया है। राम मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या भी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर रही है।

जैसा कि दुनिया पर्यटन के लिहाज से एशिया की ओर देख रही है, भारत दुनिया भर के यात्रियों का स्वागत करने के लिए तैयार है।

देवा ने आगे कहा, ₹चीन में पहले करीब 120 मिलियन विदेशी पर्यटक पहुंचा करते थे, लेकिन कोविड के बाद से चीन वैसा आकर्षक पर्यटन स्थल नहीं रह गया है। इसलिए भारत के लिए यह विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ाने का बेहतरीन अवसर है।"

उन्होंने एक पर्यटन स्थल के रूप में भारत की अद्वितीय अपील पर भी प्रकाश डाला, और वैश्विक यात्रियों के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता के पीछे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से लेकर प्राचीन समुद्र तटों और स्वादिष्ट व्यंजनों तक की विविधता को मुख्य कारक बताया।

मई में इतने दिन बंद रहेंगे बैंक, चेक करें RBI हॉलिडे लिस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

रविवार और दूसरे-चौथे शनिवार को बैंक में कोई काम नहीं होता है। इसके अलावा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय त्योहार की वजह से भी कई राज्य में बैंक बंद होते हैं। ऐसे में अगर आप बैंक जाने वाले हैं तो आपको एक बार अपने शहर के बैंक हॉलिडे लिस्ट जरूर चेक करनी चाहिए। आरबीआई ने मई 2024 के बैंक हॉलिडे लिस्ट जारी कर दी है।

नई दिल्ली। मई का महीना शुरू होने वाला है। ऐसे में मई महीने के शुरू होने से पहले भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने बैंक हॉलिडे लिस्ट (RBI Bank Holiday List) जारी कर दी है। वैसे तो हर महीने के दूसरे और चौथे शनिवार के साथ रविवार को बैंक में छुट्टी होती है।

अगर आप भी मई में किसी काम से बैंक जाने वाले हैं तो आपको एक बार चेक कर लेना चाहिए कि कहीं आपके शहर में बैंक बंद तो नहीं है।

14 दिन बंद रहेंगे बैंक

आरबीआई के बैंक हॉलिडे लिस्ट के अनुसार मई 2024 (May 2024) में कुल 14 दिन बैंक बंद रहेंगे। महाराष्ट्र दिवस, लोक सभा चुनावों, अक्षय तृतीया, बुद्ध पूर्णिमा आदि की वजह से मई में बैंक बंद रहने वाले हैं। बता दें कि सभी राज्यों के बैंक हॉलिडे अलग होते हैं। चलिए, जानते हैं कि मई में कब और किस राज्य के बैंक बंद रहेंगे।

मई 2024 के लिए बैंक हॉलिडे लिस्ट

1 मई 2024- महाराष्ट्र दिवस और मजदूर दिवस के अवसर पर बेलापुर, बेंगलुरु, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, कोच्चि, कोलकाता, मुंबई और नागपुर के बैंक बंद रहेंगे।

5 मई 2024- इस दिन रविवार की वजह से सभी शहरों के बैंक बंद रहेंगे।

7 मई 2024- लोकसभा चुनावों का तीसरा चरण 7 मई को है। ऐसे में चुनावी मतदान की वजह से अहमदाबाद, भोपाल, पणजी, और रायपुर के बैंक में कोई कारोबार नहीं होगा।

8 मई 2024- रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के मौके पर कोलकाता में बैंक हॉलिडे है।

10 मई 2024- अक्षय तृतीया के मौके पर बेंगलुरु के बैंक में कोई कारोबार नहीं होगा।

11 मई 2024- मई का दूसरे शनिवार की वजह से इस दिन देश के सभी बैंक बंद रहेंगे।

12 मई 2024- इस दिन रविवार की वजह से सभी शहरों के बैंक बंद रहेंगे।

13 मई 2024- लोकसभा चुनाव के चौथे चरण की वोटिंग के कारण श्रीनगर में बैंक हॉलिडे है।

16 मई 2024- स्टेट डे के मौके पर गंगटोक में बैंक हॉलिडे है।

19 मई 2024- इस दिन रविवार की वजह से सभी शहरों के बैंक बंद रहेंगे।

20 मई 2024- लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण की वोटिंग के कारण बेलापुर, मुंबई में बैंक बंद रहेंगे।

23 मई 2024- बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर अगरतला, आइजोल, बेलारपुर, भोपाल, चंडीगढ़, देहरादून, ईटानगर, जम्मू, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, नई दिल्ली, रायपुर, रांची, शिमला और श्रीनगर में बैंक हॉलिडे है।

25 मई 2024- मई का चौथा शनिवार की वजह से इस दिन बैंक बंद रहेंगे.

26 मई 2024- इस दिन रविवार की वजह से सभी शहरों के बैंक बंद रहेंगे।

बैंक हॉलिडे वाले दिन मिलती है ये सर्विस

बैंक हॉलिडे वाले दिन भी ग्राहक कई बैंकिंग सर्विस का इस्तेमाल कर सकते हैं। ग्राहक एटीएम में जाकर कैश विड्रॉ कर सकते हैं। इसके अलावा नेट बैंकिंग और यूपीआई के जरिये ऑनलाइन ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

महंगाई पर लोगों की राय ले रहा RBI, क्या EMI के मोर्चे पर मिल सकती है राहत?

रिजर्व बैंक अपनी अगली मौद्रिक नीति की मीटिंग से पहले सर्वे कर रहा है। इसमें वह उपभोक्ताओं से महंगाई पर उनकी राय जानना चाहता है। केंद्रीय बैंक जानना चाहता है कि मुद्रास्फीति का लोगों की खरीद क्षमता पर क्या असर पड़ रहा है। ये सर्वे आरबीआई की अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति के लिए महत्वपूर्ण इनपुट देंगे। अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति 5-7 जून के बीच होने वाली है।

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सोमवार को 'Inflation Expectations Survey of Households' और 'Consumer Confidence Survey' शुरू करने की घोषणा की। ये दोनों ही सर्वे आरबीआई की अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति के लिए महत्वपूर्ण इनपुट देंगे। अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति 5-7 जून के बीच होने वाली है।

मुद्रास्फीति पर लोगों की राय

आरबीआई ने एक आधिकारिक बयान में कहा, 'हमारे 'इंडियन एक्सपेक्टेशन सर्वे ऑफ हाउसहोल्ड्स' का मकसद गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, कोलकाता, लखनऊ और तिरुवनंतपुरम सहित 19 शहरों में उपभोक्ताओं का राय लेना है। इससे पता चलेगा कि व्यक्तिगत रूप से उन पर मुद्रास्फीति का क्या असर पड़ा है।'

इस सर्वे में आरबीआई से लोगों से पूछता है कि किसी उत्पाद की कीमतों में बदलाव का उनकी खरीद क्षमता पर क्या असर पड़ सकता है। इस आधार पर आरबीआई को व्यक्तिगत स्तर पर महंगाई का आकलन करने में मदद मिलती है। यह मौजूदा, तीन महीने आगे और एक साल आगे की मुद्रास्फीति दरों पर क्वांटिटिव रिस्पॉन्स भी मांगता है।

आय और खर्च की जानकारी

केंद्रीय बैंक ने एक अन्य विज्ञप्ति में कहा, 'कंज्यूमर कॉन्फिडेंस सर्वे सामान्य आर्थिक स्थिति, रोजगार परिदृश्य, मूल्य स्तर, परिवारों की आय और खर्च पर उनकी भावनाओं के संबंध में परिवारों से क्वांटिटिव रिस्पॉन्स मांगता है। यह सर्वे अहमदाबाद, बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई और दिल्ली सहित 19 शहरों में होता है।'

आरबीआई ने कहा कि सर्वेक्षण के नतीजे मौद्रिक नीति के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं।

कम नहीं हो रहा भू-राजनीतिक तनाव, जानें भारत के निर्यात पर क्या होगा असर

दुनियाभर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव का असर मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही के निर्यात पर पड़ सकता है। यह आशंका फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशंस (FIEO या फियो) ने जताई है। फियो का कहना है कि रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के कारण उत्पन्न वैश्विक अनिश्चितताओं ने 2023-24 में भारत के निर्यात को प्रभावित किया है।

नई दिल्ली। दुनियाभर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव का असर मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही के निर्यात पर पड़ सकता है। यह आशंका फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशंस (FIEO या फियो) ने जताई है।

निर्यातकों के संगठन फियो का कहना है कि रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के कारण उत्पन्न वैश्विक अनिश्चितताओं ने 2023-24 में भारत के निर्यात को प्रभावित किया है। यह 3.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 437 अरब डॉलर पर आ गया है। आयात भी आठ प्रतिशत से अधिक घटकर 677.24 अरब डॉलर रह गया है।

फियो के महानिदेशक अजय सहाय ने कहा, 'अगर वैश्विक स्थिति ऐसी ही बनी रही तो इसका असर वैश्विक मांग पर दिखाई पड़ेगा। पहली तिमाही में मांग में सुस्ती दिख सकती है।' उन्होंने कहा, 'तमाम चुनौतियों के बावजूद माल ढुलाई की दरों में नरमी आ रही है और यह संकेत देता है कि आने वाले समय में मांग पर असर पड़ सकता है। अगर मौजूदा स्थिति कायम रहती है तो विश्व व्यापार पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।'

उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में और अधिक मंदी

अजय सहाय का कहना है कि भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के अलावा उच्च मुद्रास्फीति और उच्च ब्याज दरें भी मांग में मंदी की प्रमुख वजह हैं। यूरोप जैसी कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में और अधिक मंदी देखी जा सकती है।'

उन्होंने यह भी कहा कि 2023-24 के दौरान भारत की घरेलू मुद्रा में चीनी युआन के 4.8 प्रतिशत के मुकाबले 1.3 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। वहीं रुपये के मुकाबले थाइलैंड की मुद्रा में 6.3 प्रतिशत और मलेशिया की करेंसी में सात प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

जब फियो के महानिदेशक से इजरायल-ईरान युद्ध के प्रभाव के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग क्षेत्र के कुछ निर्यातकों ने बताया है कि संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और फिर ईरान जाने वाले सामानों की मांग पहले से कम हो गई है।

सरकार से निर्यातकों के मदद की अपील

फियो के महानिदेशक अजय सहाय ने सरकार को नकदी के मोर्चे पर निर्यातकों के लिए कुछ कदम उठाने का भी सुझाव दिया। सहाय ने कहा, 'मांग में कमी के कारण, उसका उठाव कम होगा, इसलिए विदेशी खरीदारों को भुगतान करने में भी लंबा समय लगेगा। ऐसे में हमें लंबी अवधि के लिए धन की जरूरत होगी।'

सहाय ने निर्यातकों को भी ब्याज सहायता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने ब्याज समानीकरण योजना को आगे भी जारी रखने की मांग की। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आठ दिसंबर, 2023 को इस योजना को 30 जून तक जारी रखने के लिए 2,500 करोड़ रुपये के अतिरिक्त आवंटन की मंजूरी दी थी।

हिंदुस्तान जिंक के OFS पर फैसला बाजार परीक्षण के बाद, कंपनी में सरकार की 29.54 प्रतिशत हिस्सेदारी

नई दिल्ली। खनन सचिव वीएल कांता राव ने सोमवार को कहा कि सरकार बिक्री पेशकश (ओएफएस) के माध्यम से वेदांता समूह की कंपनी हिंदुस्तान जिंक में अपनी हिस्सेदारी बेचने के लिए प्रतिबद्ध है और इस संबंध में बाजार का परीक्षण करने के बाद कोई फैसला लेगी। हिंदुस्तान जिंक में सरकार की 29.54 प्रतिशत हिस्सेदारी है। खास बात यह है कि मंत्रालय का बयान हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की डिमर्जर योजना को खारिज करने के बाद आया है।

हालांकि राव ने स्पष्ट किया कि एक शेयरधारक के तौर पर कंपनी डिमर्जर पर सहमत नहीं है। कंपनी ने अपने बाजार पूंजीकरण को बढ़ाने के लिए अपने कारोबार को जस्ता और चांदी सहित अलग-अलग कंपनियों में विभाजित करने की योजना का एलान किया था। सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में सरकार को हिंदुस्तान जिंक में अपनी शेष हिस्सेदारी को खुले बाजार में बेचने की अनुमति दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में सरकार को हिंदुस्तान जिंक में अपनी शेष हिस्सेदारी को खुले बाजार में विनिवेश करने की अनुमति दी।

EPFO खाताधारक का मुफ्त में होता है 7 लाख का बीमा, जानें कैसे उठा सकते हैं स्कीम का लाभ

EPFO के सभी सदस्यों को एंप्लॉयीज डिपॉजिट लिंक्ड इंश्योरेंस स्कीम (EDLI) 1976 के तहत कवरेज मिलता है। इसमें कर्मचारी की बीमारी दुर्घटना या स्वाभाविक मृत्यु होने पर बीमा कवर मिल सकता है। कर्मचारी के कानूनी वारिसों को 7 लाख रुपये तक की मदद मिल सकती है। आइए जानते हैं कि इस स्कीम का लाभ उठाने की शर्त क्या है और इसमें क्लेम अमाउंट को कैसे कैलकुलेट किया जाता है।

नई दिल्ली। आज के दौर में इंश्योरेंस कवर बेहद जरूरी हो गया है। इससे परिवार का आर्थिक भविष्य सुरक्षित हो जाता है। यही वजह है कि ज्यादातर लोग अपने साथ घर और गाड़ी तक भी बीमा कराते हैं। लेकिन, सरकार की एक स्कीम ऐसी है, जिसमें आपको एक भी पैसा खर्च किए बगैर 7 लाख रुपये के बीमा का लाभ मिलता है।

कैसे मिलता है इंश्योरेंस

अगर आप नौकरीपेशा हैं और आपकी सैलरी से प्रोविडेंट फंड (PF) कटता है, तो आपको 7 लाख रुपये का बीमा मिल जाएगा। सबसे अच्छी बात यह है कि आपको प्रीमियम के तौर पर एक भी रुपया नहीं देना होगा। यह बीमा कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) से मिलता है।

दरअसल, EPFO के सभी सदस्यों को एंप्लॉयीज डिपॉजिट लिंक्ड इंश्योरेंस स्कीम (EDLI) 1976 के तहत कवरेज मिलता है। इसमें कर्मचारी की बीमारी, दुर्घटना या स्वाभाविक मृत्यु होने पर बीमा कवर मिल सकता है। ऐसे में कर्मचारी के नॉमिनी या फिर कानूनी वारिसों को 7 लाख रुपये तक की मदद मिल सकती है।

कैसे तय होती है बीमा रकम?

कर्मचारी के सैलरी से कटने वाले पीएफ का 0.5 EDLI स्कीम में जमा होता है। ELDI स्कीम में आपको कितनी रकम मिलेगी, यह तय होता है आपकी पिछले 12 महीनों की सैलरी के आधार पर। इंश्योरेंस कवर का क्लेम आखिरी बेसिक सैलरी प्लस DA का 35 गुना होगा। साथ ही, 1,75,000 तक की बोनस रकम भी मिलती है।

मिसाल के लिए, अगर किसी कर्मचारी की पिछले 12 महीने की औसत सैलरी प्लस डीए 15,000 रुपये है। इस सूरत में क्लेम की रकम 35 x 15,000 यानी 5,25,000 रुपये होगी। इसमें 1,75,000 रुपये का बोनस जोड़ने पर क्लेम की कुल रकम हो जाएगी 7 लाख रुपये।

कितना मिलता है इंश्योरेंस क्लेम

EDLI स्कीम के तहत कम से कम 2.5 लाख रुपये और अधिकतम 7 लाख रुपये का इंश्योरेंस क्लेम मिल सकता है। हालांकि, मिनिमम क्लेम के लिए शर्त यह है कि कर्मचारी कम से कम 12 महीने तक लगातार नौकरी कर रहा हो। नौकरी छोड़ने वाले खाताधारकों को यह लाभ नहीं मिलता।

इस इंश्योरेंस पर क्लेम नौकरी के दौरान होने वाली मौत पर ही किया जा सकता है। चाहे वह दफ्तर में हो या फिर छुट्टी पर। लेकिन, रिटायरमेंट के बाद यह इंश्योरेंस क्लेम नहीं मिलता। इंश्योरेंस क्लेम करते समय डेथ सर्टिफिकेट और सक्सेशन सर्टिफिकेट जैसे कागजात मांगे जाते हैं।

अगर दावा किसी नाबालिग का अभिभावक कर रहा है, तो गार्जियनशिप सर्टिफिकेट और बैंक डिटेल्स भी देनी होगी।

'देश में मौसमी फ्लू के मामलों में चौंकाने वाला उछाल नहीं', स्वास्थ्य मंत्रालय बोला- नियंत्रित हैं हालात

मंत्रालय ने बताया कि अगर दूध को ढंग से उबाला जाए और मांस को पर्याप्त तापमान में पकाया जाए तो लोगों में वायरस के प्रसार को रोका जा सकता है। बयान में कहा गया मंत्रालय ने बताया कि स्थिति नियंत्रण में है।

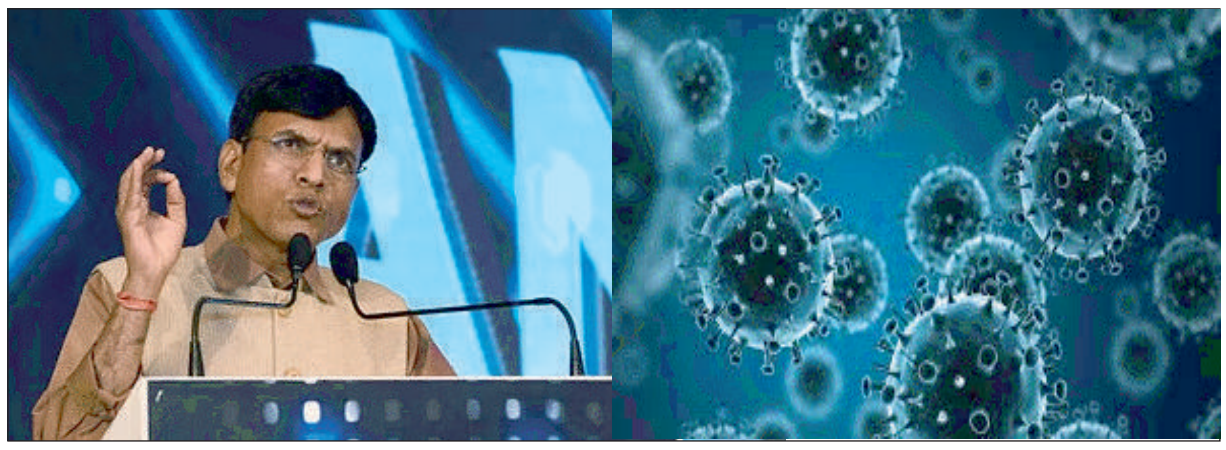

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि देश के किसी भी हिस्सों में मौसमी फ्लू के मामलों में हैरान करने वाली वृद्धि नहीं हुई है। मंत्रालय एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम नेटवर्क के माध्यम से स्थिति पर कड़ी नजर रख रहा है। मंत्रालय ने बताया कि इन्फ्लुएंजा-एएच1एन1 का पहला मामला 2009 में सामने आया था। मौसमी इन्फ्लूएंजा देश में दो समय चरम पर होते हैं- एक तो जनवरी से मार्च के बीच और दूसरा मानसून के बाद। बयान में मंत्रालय ने बताया कि अगर दूध को ढंग से उबाला जाए और मांस को पर्याप्त तापमान में पकाया जाए तो लोगों में वायरस के प्रसार को रोका जा सकता है। बयान में कहा गया मंत्रालय ने बताया कि स्थिति नियंत्रण में है। इन्फ्लुएंजा वायरस के खिलाफ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय भी निगरानी कर रहा है। बता दें, मौसमी इन्फ्लूएंजा एक सांस संबंधी बीमारी है, जो इन्फ्लूएंजा वायरस के कारण होती है। यह विश्व के सभी हिस्सों में फैलता है। इन्फ्लूएंजा संक्रमण का खतरा सबसे अधिक छोटे बच्चे और बुजुर्गों में हैं।

यह 2009 में मिला था एच1एन1 स्ट्रेन

यह स्ट्रेन 2009 में फैला था। 2009 के बाद जब यह स्ट्रेन पॉजिटिव आता है तो इसको एच1एन1 पेंडमिक कहते हैं। पहले मरीज का इन्फ्लुएंजा ए टेस्ट किया जाता है। यह टेस्ट पॉजिटिव आता है तो मरीज का एच1एन1 किया जाता है। हालांकि 2009 के बाद से इसको सीजनल इन्फ्लूएंजा भी कहा जाने लगा है।

ऐसे फैलता है वायरस

यह एक संक्रामक रोग है इसलिए इसका संक्रमण मरीज के संपर्क में आने से फैलता है। यह संपर्क कई तरीकों से हो सकता है जैसे, संक्रमित व्यक्ति की छींक के समय निकले संक्रमित द्रव की बूंदों के संपर्क में आने से, संक्रमित व्यक्ति के खांसने से निकली हवा के संपर्क में आने से और यदि संक्रमित व्यक्ति छींकने या खांसने के समय अपने हाथ को लगाता है और फिर इसी हाथ से किसी अन्य व्यक्ति से हाथ मिलाता है।

लक्षण-

सर्दी-खांसी
नाक बंद हो जाना या नाक से पानी बहना
सिरदर्द
शरीर दर्द
थकान
ठंड लगना
पेटदर्द
बुखार
कभी-कभी उल्टी और दस्त

मय 3 मे रायगड़ा आएंगे राहुल गांधी, बिशाल जनसभा को सम्बोधन करेंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर : कोरापुट, नबरंगपुर, ब्रह्मपुर और कालाहांडी संसदीय क्षेत्रों और इसके अंतर्गत आने वाली 28 विधानसभा सीटों पर 13 मई को चुनाव होंगे। राहुल गांधी 8 जिलों में 4 एमपी और 28 एमएलए उम्मीदवारों के लिए प्रचार करेंगे । इसलिए वे तीन मई को रायगड़ा आ रहे हैं ।वह यहां आयोजित एक जनसभा को संबोधित करेंगे । रायगड़ा शहर के उपनगर बाइपास के बारीझोला मोहल्ले में सारी व्यवस्थाएं कर ली गई हैं। रायगड़ा, कोरापुट, नबरंगपुर, मलकानगिरी, कालाहांडी, नुआपाड़ा, गजपति और गंजम जिलों के नेता और कार्यकर्ता शामिल होंगे। 8 जिलों में 1 लाख लोगों की मुलाकात की व्यवस्था की जा रही है । सांसद सप्तगिरि शंकर उल्लाका ने कहा कि इसकी तैयारी आज से शुरू हो गयी है । राहुल के बाद आएंगी प्रियंका गांधी । वह नबरंगपुर लोकसभा क्षेत्र में जनसभा में शामिल होंगे । अविभाजित कोरापुट और कालाहांडी जिलों को एक बार फिर कांग्रेस के कब्जे में लाने के लिए एआईसीसी के दिग्गज नेता दौरा कर रहे हैं । इसी तरह, श्री उल्लाका ने बताया कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी 8 मई को आ रहे हैं।

अंतरिक्ष के मलबे से टकरा सकता था चंद्रयान-3, इसरो की 'चार सेकंड' की सूझबूझ से टला बड़ा हादसा

नई दिल्ली। भारत के चंद्रयान-3 मिशन को लेकर एक अहम जानकारी सामने आई है। इसरो का कहना है कि चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट लैंडिंग की थी। इसके बाद अंतरिक्ष के मलबे के टुकड़े से टकराने से बचने के लिए यान चार सेकंड देरी से रवाना हुआ।

लिफ्ट ऑफ में की गई चार सेकंड की देरी

इंडियन सिचुएशनल स्पेस अवेयरनेस रिपोर्ट (ISSAR) की रिपोर्ट के अनुसार चंद्रयान -3 को ले जाने वाले लॉन्च व्हीकल मार्क -3 के लिफ्ट-ऑफ में चार सेकंड की देरी की गई। यह देरी अंतरिक्ष के मलबे के एक टुकड़े से टकराने से बचने के लिए की गई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का कहना है कि ओवरलैपिंग मलबे के टुकड़े और कक्षीय चरण में इंजेक्ट किए गए उपग्रहों के बीच टकराव से बचने के लिए लिफ्ट ऑफ में देरी आवश्यक थी। बता दें कि 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा में इसरो के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर के साथ भारत का चंद्रयान -3 मिशन लॉन्च किया गया था। 23 अगस्त, 2023 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र के पास यान को सुरक्षित रूप से उतारा था।

चार सेकंड की देरी ने टाला टकराव का खतरा

चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण में चार सेकंड की देरी ने टकराव के खतरे को टाल दिया और चंद्रमा की यात्रा पर अंतरिक्ष यान के लिए सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित किया। आईएसएसएआर-2023 की रिपोर्ट के अनुसार अंतरिक्ष के मलबे से टकराव से बचने के लिए इसरो को 30 जुलाई 2023 को पीएसएलवी-सी56 मिशन के तहत सिंगापुर के डीएस-एसएआर उपग्रह के प्रक्षेपण में एक मिनट की देरी करनी पड़ी थी। इसी तरह 24 अप्रैल 2023 को सिंगापुर के उपग्रह TeLEOS-2 के प्रक्षेपण में संभावित टकराव के विश्लेषण के बाद एक मिनट की देरी करनी पड़ी थी। रिपोर्ट में बताया गया है कि इसरो द्वारा अपने उपग्रहों को अंतरिक्ष मलबे से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए 2023 में 23 बार ऐसी कोशिशें करनी पड़ीं।

आईएसएसएआर-2023 रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि इसरो को यूएस स्पेस कमांड से लगभग 1,37,565 क्लोज अप्रोच अलर्ट मिले थे। इनमें से एक किमी की दूरी से कम वाले कुल 3,033 क्लोज अप्रोच अलर्ट थे, जिनमें अंतरिक्ष के मलबे से टकराव की स्थिति बन सकती थी।

सोचना जरूर:- शादी या इवेंट

दिखावे में बर्बाद होते समाज को इसमें कमी लाने की आवश्यकता है वरना अनर्गल पैसों का बोझ बढ़ते बढ़ते वैदिक वैवाहिक संस्कारों को ही समाप्त कर देगा।

एक सर्वे के मुताबिक भारत में साल भर में शादियों पर जितना खर्च हो रहा है, उतनी कई देशों की जीडीपी भी नहीं है। सनातन में शादी एक संस्कार होती थी जो अब एक इवेंट बन कर रह गई हैं। पहले शादी समारोह मतलब दो लोगों को जुड़ने का एहसास कराते पवित्र विधि विधान, परस्पर दोनों पक्षों की पहचान कराते रीति-रिवाज, नेग भी मान सम्मान होते थे। पहले हल्दी और मेंहदी यह सब घर अंदर हो जाता था किसी को पता भी नहीं होता था। पहले जो शादियां मंडप में बिना तामझाम के होती थी, वह भी शादियां ही होती थी और तब दाम्पत्य जीवन इससे कहीं ज्यादा सुखी थे। परंतु समाज व सोशल मीडिया पर दिखावे का ऐसा भूत चढ़ा है कि किसी को यह भान ही नहीं है कि क्या करना है क्या नहीं ? यह एक दूसरे से ज्यादा आधुनिक और अमीर दिखाने के चक्कर में लोग हद से ज्यादा दिखावा करने लगे हैं। अड़तालिस किलो की बिटिया को पचास किलो का लहंगा भारी न लगता। माता पिता की अच्छी सीख की तुलना में कई किलो मेकअप हल्का लगता है। हर इवेंट पर घंटों का फोटो शूट थकान नहीं देता पर शादी की रस्म शुरू होते ही पंडित जी जल्दी करिए, कितना लम्बा पूजा पाठ है, कितनी थकान वाला सिस्टम है? कहते हुए शर्म भी न आती। वाक़ई, अब की शादियाँ हैरान कर देने वाली हैं। मज़े की बात ये है कि ये एक सामाजिक बाध्यता बनती जा रही है। उत्तर भारत में शादियों में फ़िज़ूल खर्ची धीरे धीरे चरम पर पहुँच रही है। पहले मंडप में शादी, वरमाला सब हो जाता था। फिर अलग से स्टेज का खर्च बढ़ा, अब हल्दी और मेहंदी में भी स्टेज, खर्च बढ़ गया है। प्री वेडिंग फोटोशूट, डेस्टिनेशन वेडिंग, रिसेप्शन, अब तो सगाई का भी एक भव्य स्टेज तैयार होने लगा है। टीवी सीरियल देख देख कर सब शौक चढ़े है। पहले बच्चे हल्दी में पुराने कपड़े पहन कर बैठ जाते थे अब तो हल्दी के कपड़े पांच दस हजार के आते है। प्री वेडिंग शूट, फर्स्ट कॉपी डिजाइनर लहंगा, हल्दी/मेहंदी के लिए थीम पार्टी, लेडिज संगीत पार्टी, बैचलर'स पार्टी, ये सब तो लडकी वाला नाक उँची करने के लिये करवाता है। यदि लड़की का पिता खर्च मे कमी करता है तो उसकी बेटी कहती है कि शादी एक बार ही होगी और यही हाल लड़के वालो का भी है। मजे की बात यह है कि स्वयं बेटा-बेटी ही इतना फिल्मी तामझाम चाहते हैं, चाहे वो बात प्री-वेडिंग शूट की हो या महिला संगीत की, कहीं कोई नियंत्रण नहीं है। लडक़ी का भविष्य सुरक्षित करने के बजाय पैसा पानी की तरह बहाते हैं। अब तो लड़का लड़की खुद माँ बाप से खर्च करवाते हैं। शादियों में लड़के वालों का भी लगभग उतना ही खर्चा हो रहा है जितना लड़की वालों का। अब नियंत्रण की आवश्यकता जितना लड़की वाले को है, उतना ही लड़के वाले को भी है। दोनों ही अपनी दिखावे की नाक ऊंची रखने के लिए कर्जा लेकर घी पी रहे हैं। कभी ये सब अमीरों, रईसों के चोंचले होते थे लेकिन देखा देखी अब मिडिल क्लास और लोअर मिडिल क्लास वाले भी इसे फॉलो करने लगे है। रिश्तों में मिठास खत्म ये सब नौटंकी शुरू हो गई। एक मजबूत के चक्कर में दूसरा कमजोर भी फंसता जा रहा है। कुछ वर्षों पहले ही शादी के बाद औकात से भव्य रिसेप्शन का क्रेज तेजी से बढ़ा। धीरे-धीरे एक दूसरे से बड़ा दिखने की होड़ एक सामाजिक बाध्यता बनती जा रही है। इन सबमें मध्यम वर्ग परिवार मुसीबत में फंस रहे हैं कि कहीं अगर ऐसा नहीं किया तो समाज में उपहास का पात्र ना बन जायें। सोशल मीडिया और शादी का व्यापार करने वाली कंपनिया इसमें मुख्य भूमिका निभा रहीं हैं। ऐसा नहीं किया तो लोग क्या कहेंगे / सोचेंगे का डर ही ये सब करवा रहा है। कोई नही पूछता उस पिता या भाई से जो जीवनभर जी तोड़ मेहनत करके कमाता है ताकि परिवार खुश रह सकें। वो ये सब फिजूलखर्ची भी इसी भय से करता है कि कोई उसे बुढ़ापे में ये ना कहे के आपने हमारे लिए किया क्या। दिखावे में बर्बाद होते समाज को इसमें कमी लाने की आवश्यकता है वरना अनर्गल पैसों का बोझ बढ़ते बढ़ते वैदिक वैवाहिक संस्कारों को समाप्त कर देगा। शादियां संस्कार के लिए नही दिखावे और आज के युग के अनुसार इंवेट बन कर रह जाएगी।

हापुड़ में बड़ा हादसा: बेकाबू कार ने चार महिलाओं को रौंदा, एक की मौत; खाना खाकर वॉक पर निकली थीं सभी

परिवहन विशेष न्यूज

हापुड़। घटना के बाद कार चालक मौके से कार सहित फरार हो गया। मौके पर पहुंचे लोगों ने पुलिस को सूचना देते हुए घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां नेहा को मृत घोषित कर दिया गया।

यूपी के हापुड़ देहात थाना क्षेत्र के अन्तर्गत गढ़ रोड पर फ्लाईओवर के उतार के पास तेज रफ्तार एक कार ने तीन महिलाओं को रौंद दिया। जिसमें शिवनगर निवासी छात्रा नेहा उर्फ छोटी (28) की मौत हो गई। जबकि तीन अन्य को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस आरोपी कार चालक की तलाश कर रही है। पुलिस के अनुसान मोहल्ला शिवनगर निवासी नेहा पड़ोस की रहने वाली टीना, पूनम और उसकी पुत्री माही के साथ खाना खाने के बाद टहलने के लिए निकली थीं। गढ़ रोड फ्लाईओवर के उतार के पास गढ़ रोड पर चारों सड़क किनारे टहल रही थीं। इसी दौरान हापुड़ से गढ़ की ओर जा रही एक अनियंत्रित कार ने चारों को कुचल दिया। जिसमें चारों गंभीर रूप से घायल हो गईं। घटना के बाद कार चालक मौके से कार सहित फरार हो गया। मौके पर पहुंचे लोगों ने पुलिस को सूचना देते हुए घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां नेहा को मृत घोषित कर दिया गया। जबकि अन्य तीनों की हालत भी गंभीर बताई जा रही है। सूचना पर देहात और हापुड़ कोतवाली पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। सीओ वरुण कुमार मिश्रा ने बताया कि आसपास में लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच के आधार पर आरोपी कार चालक की तलाश की जा रही है। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार किया जाएगा।

ऋषिकेश धार्मिक पर्यटक स्थल बना गोवा-बैंकॉक

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नंग धडंग विदेशी पर्यटकों ने उत्तराखंड देवभूमि ऋषिकेश को वैंकॉक- गोवा बना दिया है।लोकल लोगों का आरोप है कि अधिकतर विदेशी लोग यहां पर नशा और एडवेंचर्स पार्टी करने के लिए पहुंचते है।जबकि बहुत कम लोग धार्मिक अनुष्ठान की भावना के साथ आते हैं। धार्मिक लोग यहां अपने धार्मिक श्रद्धा भावनाओ के साथ मां गंगा का आशीर्वाद लेने आते है। लेकिन पिछले कुछ सालों से ऋषिकेश एक टूरिस्ट प्लेस के तौर पर देश ही नहीं पूरी दुनियां में छा गया है।लोग अब यहां नशा और एडवेंचर करने के लिए इक्कठा होते है।जिससे यहां का माहौल खराब हो रहा है। सोशल मीडिया में भी इन नंग धडंग विदेशी लोगों को वायरल किया जा रहा है। देवभूमि से ऐसी वायरल फोटो विडियो से यहां के मूल निवासियों में खासा रोष है। उन्होने ऐसी स्थिति पर चिंता जताई है।दरअसल वायरल तस्वीरों और विडियो में कुछ विदेशी लोग कम कपडों में अश्लील तरीके से मां गंगा नदी में नहाते दिखाई दे रहे हैं। विदेशी महिलाए बिकीनी पहने हुई है और शार्ट पहने हुए रहते हैं। सभी गंगा किनारे मौज मस्ती और स्नान करते दिखाई देते है। इससे यहां की पवित्रता और धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंच रही है।यहां पहुंचने

वाले धार्मिक श्रद्धालु खासी बेचैनी और नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं। देवभूमि भारत के साथ इस तरह से खिलवाड बेहद निंदनीय है। नाराज ,श्रद्धालुओ ने उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी से पवित्र गंगा को गोवा-बैंकाक बीच में तब्दील होने से बचाने के खातिर विदेशी पर्यटकों को तत्काल यहां के लिए गाइड लाइन तैयार करने की मांग तक कर डाली है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095.
newstransportvishesh@gmail.com